शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

लखनऊ, मंगलवार 18 फरवरी 2025 नगर संस्करण | पृष्ठ :-8 मूल्य :-4 रूपया | वर्ष:- 14, अंक 35

विदेश मंत्री ने आपसी सहयोग बढ़ाने पर... • लखनऊ से प्रकाशित हिंदी दैनिक समाचार पत्र • परीक्षा पे चर्चा: बिना नाकामी के कामयाबी नहीं...

महाकुम्भ का विरोध करने वालों से बेहतर है हमारी इकॉनमिक्स: योगी

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि अपनी संस्कृति और परंपराओं को सम्मान देकर किस तरह देश की एकता और आर्थिकी को प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह महाकुम्भ के अवसर पर सहज ही अनुभव किया जा सकता है।

उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में अयोध्या, काशी और प्रयागराज में जिस प्रकार श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है, उसने भारतीय संस्कृति को नई पहचान तो दी ही है, अर्थव्यवस्था को भी बड़ा बूस्ट दिया है। अयोध्या, काशी और प्रयागराज ने भारत के पोटेंशियल को दर्शाया है। महाराष्ट्र से आये युवा उद्यमियों से संवाद करते हुये उन्होने कहा महाकुम्भ का विरोध करने वालों से हमारी इकॉनमिक्स बेहतर है। उन्होंने उद्यमियों से पूछा कि अगर केंद्र व राज्य की तरफ से मिलकर 7500 करोड़ रुपये खर्च करके अर्थव्यवस्था में तीन से साढ़े तीन लाख की अतिरिक्त वृद्धि हो सकती है तो कौन सा सौदा सही है। उन्होंने कहा कि अयोध्या, प्रयागराज, काशी, चित्रकूट, गोरखपुर, नैमिषारण्य में बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर है। अयोध्या में सड़क चौड़ीकरण, इंटरनेशनल एयरपोर्ट निर्माण, काशी विश्वनाथ धाम के दौरान यह लोग विरोध कर रहे थे, लेकिन जब सरकार ने दृढ़ इच्छाशक्ति से निर्णय लिया तो रिजल्ट सामने है। एक वर्ष में रामजन्मभूमि मंदिर में 700 करोड़ का चढ़ावा आया। इन लोगों को अब यह भी बुरा लगेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकुम्भ में अब तक 53 करोड़ श्रद्धालु संगम में आस्था की पावन डुबकी लगा चुके हैं। अगले 9 दिन तक यह उत्सव इसी रूप में चलेगा। यही भारत की पोटेंशियल है। भारत की आस्था को यदि सम्मान दिया गया होता तो भारत और भी ऊंचाइयों को प्राप्त किया होता। मुख्यमंत्री ने उद्यमियों से कहा कि आप सभी को अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि, प्रयागराज, काशी समेत कई स्थलों को देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। वर्तमान में देश-दुनिया से श्रद्धालु तीनों स्थानों पर आकर भारत की आस्था को दुनिया के सामने भी दिखाकर अपनी ताकत का अहसास भी करा रहे हैं। उन्होने कहा किदेश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य यूपी में 25 करोड़ की आबादी निवास करती है।

दिल्ली-एनसीआर में भूकंप के तेज झटके

प्रधान मंत्री ने दिल्लीवासियों को शांत रहने का किया आग्रह

एजेंसी

नयी दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में सोमवार सुबह भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर भूकंप के तीव्रता चार मापी गयी। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र (एनसीएस) के अनुसार दिल्ली-एनसीआर में आज सुबह पांच बजकर 37 मिनट पर भूकंप के तेज झटके महसूस किये। भूकंप की तीव्रता चार मापी गयी और भूकंप का केन्द्र राष्ट्रीय राजधानी में जमीनी सतह से पांच किलोमीटर नीचे स्थित था। दिल्ली के अलावा फरीदाबाद, गुरुग्राम, रोहतक, गाजियाबाद, नोएडा और उसके आसपास के क्षेत्रों में भूकंप के झटके महसूस किये गये। भूकंप के कारण लोगों के घरों के छत के पंखे तेज से हिलने लगे और घरों में रखे बर्तन खड़कने लगे। डर के कारण लोग अपने घरों से बाहर निगल आये। एनसीएस के मुताबिक भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 4.0 मापी गयी। भूकंप का केन्द्र 28.59 डिग्री उत्तर अक्षांश और 77.16 डिग्री पूर्वी देशांतर, जमीनी सतह से पांच किलोमीटर की गहराई पर स्थित था। दिल्ली पुलिस ने किसी तरह की परेशानी होने पर लोगों से आपातकालीन सेवा 112 पर डायल करने की सलाह दी है। अभी तक किसी तरह के जनहानि और नुकसान की कोई रिपोर्ट सामने नहीं आयी है।

सड़क हादसा, तीन की मौत चार घायल

आजमगढ़। उत्तर प्रदेश में आजमगढ़ जिले के रानी की सराय थाना क्षेत्र में महाकुंभ से वापस आ रहे नेपाल देश के श्रद्धालुओं की एक कार सोमवार सुबह डिवाइडर में टकरा गई। इस हादसे में पति-पत्नी सहित तीन लोगों की मौत हो गई जबकि चार अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस सूत्रों ने बताया कि सभी हताहत नेपाल देश के रूपम देही जिले के देवदार नगर पालिका के निवासी हैं। यह सभी 15 फरवरी को नेपाल से प्रयागराज में स्नान करने गए थे और स्नान करके आज वापस हो रहे थे कि आजमगढ़-वाराणसी राजमार्ग पर यह हादसा हो गया। मृतकों की पहचान दीपा (35),इनके पति गनेश (45) और गंगा (40) के तौर पर की गयी है। घायलों में ऋतिक दूबे (21) ,कोपिला देवकला देवी (35), अविशंकर (25) और शुभम पोखराल (22) को गोरखपुर मेडिकल कालेज भेजा गया है। प्रथम दृष्टया दुर्घटना का कारण चालक को झपकी आना माना गया है।

2030 तक नौ लाख करोड़ रुपये के कपड़ा निर्यात का लक्ष्य- मोदी

सात प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर, रोजगार और निवेश को बढ़ावा

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारत का वार्षिक कपड़ा निर्यात तीन लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है और अब इसे 2030 तक नौ लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाने का लक्ष्य है।

श्री मोदी ने यहां भारत मंडपम में भारत टेक्स 2025 को संबोधित करते हुए कहा, भारत ने पिछले साल कपड़ा और परिधान निर्यात में सात प्रतिशत की वृद्धि देखी और अब यह दुनिया में कपड़ा और परिधान का छठा सबसे बड़ा निर्यातक है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर देते हुए कि कपड़ा क्षेत्र में सफलता एक दशक के लगातार प्रयासों और नीतियों का परिणाम है। इस बात पर प्रकाश डाला कि पिछले एक दशक में कपड़ा क्षेत्र में विदेशी निवेश दोगुना हो गया है। उन्होंने कहा, कपड़ा उद्योग देश में रोजगार के सबसे बड़े अवसरों में से एक है जो भारत के विनिर्माण क्षेत्र में 11 प्रतिशत का योगदान देता है। कार्यक्रम के दौरान श्री मोदी ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि इस आयोजन से देश की समृद्ध विरासत के साथ-साथ विकसित भारत की संभावनाओं की झलक मिलती है जो देश के लिए गर्व की बात है। श्री मोदी ने कहा, भारत टेक्स अब एक मेगा ग्लोबल टेक्सटाइल इवेंट बन रहा है। इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि पिछले साल उन्होंने टेक्सटाइल उद्योग के लिए पाँच कारकों खेत, फाइबर, कपड़ा, फैशन और विदेशी पर चर्चा की थी। श्री मोदी ने कहा कि यह विजन भारत के लिए एक मिशन बन रहा है,जो किसानों, बुनकरों, डिजाइनरों और व्यापारियों के लिए विकास के नए रास्ते खोल रहा है।

भारत टेक्स 2025 एक मेगा ग्लोबल इवेंट है। यह 14-17 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में नीति निर्माताओं और वैश्विक सीईओ, 5000 से अधिक प्रदर्शकों और 120 से अधिक देशों के 6000 अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के अलावा कई अन्य आगंतुकों के आने की उम्मीद है।

टिकाऊ उत्पादन और फैशन अपशिष्ट की चुनौती

प्रधानमंत्री ने बताया कि 2030 तक वैश्विक फैशन अपशिष्ट 14.8 करोड़ टन तक पहुंच सकता है, जबकि एक-चौथाई कपड़ा अपशिष्ट का पुनर्चक्रण नहीं हो रहा. उन्होंने भारतीय उद्योग को इसे अवसर में बदलने और सतत उत्पादन पर ध्यान देने का आह्वान किया।

अभय सिंह की विधायकी पर फैसला सुरक्षित

लखनऊ हाईकोर्ट में दोनों पक्षों की जिरह पूरी

एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ हाईकोर्ट में सपा के बागी विधायक अभय सिंह के खिलाफजानलेवा हमले के मामले में सोमवार को सुनवाई हुई। न्यायमूर्ति राजन राय की एकल पीठ ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया है। मामला 2010 का है, जब अयोध्या के महाराजगंज थाना क्षेत्र में विकास सिंह ने अभय सिंह और उनके साथियों पर जानलेवा हमले का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया था। निचली अदालत से होते हुए यह मामला लखनऊ हाईकोर्ट पहुंचा। हाईकोर्ट में आज सुनवाई में वकील नागेंद्र मोहन ने कई महत्वपूर्ण तथ्य रखे। उन्होंने बताया कि पीड़ित की एफआईआर में न तो इस्तेमाल किए गए हथियारों का विवरण दिया गया है। न ही घटना का सटीक समय बताया गया है। उन्होंने यह भी कहा पीड़ित वादी ने अपने बयान कई बार बदले हैं। कभी दो हमलावरों की बात की, तो कभी छह की। वहीं, अभियुक्त संभूनाथ सिंह के वकील ने तर्क दिया कि एफआईआर में चोटों का कोई जिक्र नहीं था, यह मुद्दा केवल ट्रायल के दौरान उठाया गया। यह भी बताया गया कि कथित फायरिंग में गाड़ी में बैठे किसी भी व्यक्ति को चोट नहीं आई। दोनों पक्षों की बहस पूरी होने के बाद न्यायालय ने आदेश को रिजर्व कर लिया है। जल्द ही फैसला आने की संभावना है। 2023 में अंबेडकर नगर एमपी,एमएलए कोर्ट ने सुनवाई के बाद अभय सिंह समेत सभी आरोपियों को बरी कर दिया था। इसके बाद विकास सिंह ने इस फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी। मामला हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच में पहुंचा, जहां 20 दिसंबर 2024 को दो अलग-अलग फैसले सामने आए। जस्टिस एआर मसूदी ने अभय सिंह समेत पांच आरोपियों को तीन साल की सजा सुनाई और जुर्माना लगाया। वहीं, जस्टिस अजय कुमार श्रीवास्तव ने उन्हें बरी कर दिया। इन विरोधाभासी फैसलों के कारण यह मामला न्यायिक उलझन में पड़ गया और इसे चीफजस्टिस अरुण भंसाली की बेंच को सौंपा गया।

कौन होगा देश का अगला मुख्य चुनाव आयुक्त?

मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति के लिए चयन समिति की हुई बैठक

एजेंसी

नई दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में तीन सदस्यीय चयन समिति की बैठक हुई। यह बैठक साउथ ब्लॉक स्थित प्रधानमंत्री कार्यालय में आयोजित की गई।

चयन समिति की बैठक में पीएम मोदी, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और प्रधानमंत्री द्वारा नामित केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शामिल हुए। यह समिति नए मुख्य चुनाव आयुक्त के चयन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगी। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि जल्दी ही इस पद के लिए नियुक्ति की घोषणा की जाएगी। यानी अगले मुख्य चुनाव आयुक्त के नाम का ऐलान जल्द हो सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली तीन सदस्यीय चयन समिति की सिफारिश के बाद राष्ट्रपति भारत के नए मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) की नियुक्ति करेंगी। अब तक परंपरा रही है कि सबसे वरिष्ठ चुनाव आयुक्त को मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में प्रमोट किया जाता है। इस समय चुनाव आयोग में वरिष्ठता के आधार पर इस पद के लिए नामों पर चर्चा की जा रही है। ऐसे में चयन समिति बैठक के बाद अपनी सिफारिश राष्ट्रपति को सौंपेगी और राष्ट्रपति द्वारा उस सिफारिश के आधार पर अगले मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति की जाएगी। मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त अधिनियम, 2023 के तहत भारत में मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) की यह पहली नियुक्ति होगी। यह अधिनियम दिसंबर 2023 में लागू हुआ था और इसके बाद से चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।

इस नए अधिनियम के तहत, मार्च 2024 में एसएस संधू और ज्ञानेश कुमार को चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया था। दोनों आयुक्तों की नियुक्ति अरुण गोयल के इस्तीफे और अनूप चंद्र पांडे की रिटायरमेंट के बाद की गई थी।

कांग्रेस ने फिर मांगा रेल मंत्री का इस्तीफा

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में भगदड़ में मारे गए लोगों के आंकड़े छुपाए जा रहे हैं और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव जिम्मेदारी निभाने की बजाय आंकड़े छुपाने में व्यस्त हैं इसलिए उन्हें इस्तीफा देना चाहिए। कांग्रेस ने अपने आधिकारिक पेज पर ट्वीट कर कहा कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुआ दर्दनाक हादसा रेल मंत्रालय और रेल मंत्री की लापरवाही का परिणाम है। रेल प्रशासन भगदड़ के लिए जिम्मेदार है और यह जिम्मेदारी लेते हुए रेल मंत्री को तुरंत इस्तीफा देना चाहिए। पार्टी ने इसके साथ ही कुछ पोस्टर भी पोस्ट किए हैं और कहा है कि रेल मंत्री ने रेलवे को बर्बाद कर दिया है। उन्हें अब पद पर रहने का अधिकार नहीं है। रेल मंत्री की लापरवाही के कारण भगदड़ में यात्रियों की जान जा रही है।

पीएम आवास योजना के आवास होंगे सौर ऊर्जा से जगमग

आवासों तक सुगम पहुंच, जल निकासी, सोलर लाइट, नि:शुल्क विद्युत और गैस कनेक्शन जैसी सुविधाएं भी प्रदान करेगी सरकार

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण (पीएमएआई-जी) और मुख्यमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत दिए जा रहे पक्के आवासों तक सुगम पहुंच, जल निकासी, सोलर लाइट, नि:शुल्क विद्युत और गैस कनेक्शन जैसी सुविधाएं भी प्रदान करेगी।

अधिकृत सूत्रों ने सोमवार को बताया कि जिन लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत पक्के आवास मिले हैं, वहां तक आवागमन के लिए योगी सरकार मनरेगा के तहत सीसी रोड और खड़ंजा मार्ग बनाएगी। इसके साथ ही, जलभराव की समस्या को दूर करने के लिए सुनियोजित जल निकासी प्रणाली विकसित करने पर जोर दिया गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को बरसात और कीचड़ जैसी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। उन्होने बताया कि पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा की बचत को ध्यान में रखते हुए योगी सरकार अब प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत बने घरों में सोलर लाइट की सुविधा देने की योजना बना रही है। इससे ग्रामीण परिवारों को बिजली संकट से राहत मिलेगी और वे नि:शुल्क सौर ऊर्जा का लाभ उठा सकेंगे। सरकार की मंशा है कि प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ पाने वाले परिवारों को सिर्फ घर ही नहीं, बल्कि जीवनयापन के लिए जरूरी अन्य सुविधाएं भी मिलें। इसके तहत हर घर को रोशन करने के लिए मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया जाएगा। इसके अलावा उज्ज्वला योजना के तहत सभी लाभार्थियों को एलपीजी गैस कनेक्शन दिया जाएगा। गरीब परिवारों को मुफ्त इलाज की सुविधा के लिए आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिलेगा। हर घर में शौचालय निर्माण की व्यवस्था की गई है ताकि स्वच्छता बनी रहे। साथ ही लाभार्थियों को 90 से 95 दिन तक की मजदूरी मनरेगा के तहत दी जाएगी, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। सूत्रों के अनुसार सरकार का लक्ष्य है कि हर जरूरतमंद को 2025 तक पक्का मकान मिले, और वे सभी बुनियादी सुविधाओं से संपन्न हों। सीएम योगी की मंशानुरूप इस योजना से गांवों में जीवन स्तर में सुधार आएगा, आवागमन सुगम होगा, महिलाओं को सशक्तिकरण मिलेगा और गरीब परिवारों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा।

RNI : UPHIN/2012/45286

शकुन टाइम्स

निष्पक्ष खबरें निर्भीक आवाज

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र (प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया)

YouTube shakuntimes

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण जिले में तहसील और ब्लाक स्तर पर संवाददाता की

प्रिन्ट एवं डिजिटल मीडिया

यदि आप भी समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार के विरूद्ध उठाना चाहते है आवाज़ तो शकुन टाइम्स दे रहा है आपको एक बेहतरीन मौका

अधिक जानाकरी के लिए

अपना नाम व जिला हमें

WhatsApp करें।

9935781155, 9415052283

खण्ड शिक्षा अधिकारी म्योरपुर ने किया दर्जनों विद्यालयों का औचक निरीक्षण

शकुन टाइम्स संवाददाता

म्योरपुर/ सोनभद। शिक्षा क्षेत्र म्योरपुर के खण्ड शिक्षा अधिकारी विश्वजीत कुमार ने सोमवार को दर्जनों विद्यालयों का औचक निरीक्षण किया। जिसमें प्राथमिक विद्यालय नवाटोला नधीरा सुबह 9:20 तक बंद पाया गया जहां पारुल श्रीवास्तव सहायक अध्यापिका, कुसुम कुमारी शिक्षामित्र, मुकेश शिक्षामित्र अनुपस्थित मिले ।कंपोजिट विद्यालय बैरागो में राजेंद्र प्रसाद प्रभारी प्रधानाध्यापक एवं असरफ सहायक अध्यापक उपस्थित, महाबली सहायक अध्यापक ,राकेश कुमार त्रिपाठी शिक्षामित्र, एवं शांतिकुंवर शिक्षा मित्र अनुपस्थिति पाए गए ।प्राथमिक विद्यालय जरहा प्रथम में सुनीता तिवारी आकस्मिक अवकाश पर एवं समस्त अध्यापक उपस्थित,कोकिला सहायक अध्यापिका निरीक्षण के समय उपस्थित हुई जिन्हें कठोर चेतावनी दी गई कि अगर भविष्य में पुनरावृति होती है तो विभागीय कार्यवाही संपादित कर दी जाएगी ।उच्च प्राथमिक विद्यालय जरहा में आरती सहायक अध्यापिका बाल्य देख भाल अवकाश पर, किरण सिंह उपस्थित,शमशेर सिंह अनुदेशक अनुपस्थित, लीलाडेवा-2 में राम कृष्ण बैस सहायक अध्यापक उपस्थित एवं शिक्षण कार्य संतोष जनक पाया गया,प्राथमिक विद्यालय लखार में धर्मेंद्र सिंह सहायक अध्यापक एवं घासी राम सहायक अध्यापक उपस्थित पाए गए,कंपोजिट विद्यालय महुली में राघवेंद्र पाल सिंह सहायक अध्यापक , स्वाति त्यागी सहायक अध्यापिका, रामलखन सिंह एवं सुनैना देवी शिक्षा मित्र उपस्थित पाए गए ,उच्च प्राथमिक विद्यालय रजमिलान में बलवंत सिंह सहायक अध्यापक उपस्थित एवं हीरा शंकर अनुदेशक अनुपस्थित पाए गए,प्राथमिक विद्यालय जलजलिया में सभी अध्यापक उपस्थित पाए गए,उच्च प्राथमिक जलजलिया में अरविंद कुमार बैस अध्यापक उपस्थित पाए गए,प्राथमिक विद्यालय सरई डॉड़ में ओम शंकर नारायण शर्मा सहायक अध्यापक उपस्थित एवं मनजीत सिंह गिल सहायक अध्यापक अनुपस्थित पाए गए,कंपोजिट विद्यालय लीलाडेवा में अशोक सिंह अनुदेशक अनुपस्थित पाए गए।

इस कार्यवाही से शिक्षा क्षेत्र म्योरपुर के शिक्षकों में हड़कंप की स्थिति बनी रही। खण्ड शिक्षा अधिकारी ने बताया कि इसी प्रकार का औचक निरीक्षण आगे भी जारी रहेगा एवं विद्यालय से बिना किसी अवकाश या सूचना के गायब रहने, कार्य में लापरवाही बरतने वाले शिक्षकों के ऊपर कठोर कार्यवाही संपादित की जाएगी।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान की हुई समीक्षा बैठक

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। जिलाधिकारी डॉ0 दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान योजना की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी ने बैंकवार लोन स्वीकृति की समीक्षा की और सभी बैंकों को निर्देश दिया कि अधिक से अधिक लोन स्वीकृत किया जाए। इसके संबंध में उन्होंने सख्त निर्देश दिया कि प्रतिदिन प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत किया जाए। उन्होंने ब्रांच वार सीडी रेशियों की रिपोर्ट देने के भी निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री जी के द्वारा स्वयं समीक्षा की जा रही है जिसके लिए सुहानुभूतिपूर्वक कार्य करते हुए लोगों को अधिक से अधिक लोन दे जिससे नए नए उद्यम लगे तथा जनपद का सीडी रेशियों बढ़ सके। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी साई तेजा सीलम, उपायुक्त उद्योग संदीप कुमार एलडीएम शंकर सामंत एवं अन्य बैंकों के जिला समन्वयक सहित बैंकों के प्रतिनिधि गण उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

योगी के सामने विधानसभा में रवि शर्मा ने उठायी बुंदेलखंड राज्य की मांग

झांसी। उत्तर प्रदेश विधानसभा में सोमवार को बुंदेलखंडी सहित छह भाषाओं की लॉन्चिंग के दौरान झांसी सदर विधायक रवि शर्मा ने सदन से पुरजोर तरीके से पृथक बुंदेलखंड राज्य की मांग उठायी। सदन में श्री शर्मा ने जब यह मांग उठायी तो उस समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सदन में मौजूद थे। मुख्यमंत्री के साथ साथ विधानसभा अध्यक्ष और अन्य गणमान्यों की उपस्थिति में सदर विधायक ने बड़े ही मोहक अंदाज में बुंदेलखंडी भाषा में यहां के निवासियों की पुरानी मांग को उठाया। झांसी विधायक के बुंदेलखंडी भाषा के दिये गये वक्तव्य की सराहना मुख्यमंत्री ने मेज थपथपाकर की। श्री शर्मा कहा बुंदेलखंड के लोग कहते हैं कि जब हमारी संस्कृति ,खान -पान और कथा कहानियां सभी कुछ अलग हैं तो फिर हमारा अलग प्रांत क्यों नहीं बना देत, साहब। झांसी विधायक के स्थानीय बोली में मीठे से उलाहने के रूप में पहुंचायी गयी बुंदेलखंडवासियों की इस बात पर मुख्यमंत्री सहित अन्य गणमान्य भी मुस्कुराते हुए नजर आये।

बुलंदशहर में हत्या के दोषी को उम्रकैद

बुलन्दशहर। उत्तर प्रदेश में बुलंदशहर जिले की एक अदालत ने सोमवार को हत्या के दोषी को आजीवन कारावास व 30 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। लोक अभियोजक सुरेंद्र सिंह ने बताया कि थाना सिकन्द्राबाद क्षेत्र के ग्राम गेसूपुर निवासी सुंदर नामक व्यक्ति ने 2016 में अपने ही गांव के सतीश कुमार की हत्या कर दी थी।

इस सिलसिले में 17 फरवरी 2016 को थाना सिकन्द्राबाद पर धारा 302,201,34 के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया था। पुलिस ने इस घटना में 21 मार्च 2016 न्यायालय में आरोप पत्र प्रेषित किया। मामले में 11 गवाह पेश किये गये और आज न्यायाधीश मंजित सिंह की अदालत ने दोष सिद्ध पाये जाने पर अभियुक्त सुन्दर को आजीवन कारावास व 30 हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया।

वक्फ बोर्ड की तरह सनातन बोर्ड का हो स्वरुपः साध्वी निरंजन

महोबा। महामंडलेश्वर और पूर्व केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति सनातन बोर्ड के गठन की वकालत करते हुये मांग की कि वक्फ बोर्ड की तरह इसे स्वरूप प्रदान किया जाए ताकि सनातन के प्रतीकों,धर्म और संस्कृति का संरक्षण हो सके। साध्वी ने सोमवार को यहां पत्रकारों से बातचीत में कहा कि प्रयागराज महाकुम्भ को लेकर अनर्गल बयानबाजी करने वाले सनातन द्रोही है। बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री लालू प्रसाद यादव का चरित्र जग जाहिर है। उन्होंने पूर्व में राम जन्म भूमि स्थल पर शौचालय निर्माण कराये जाने का बयान देकर अपनी विकृत बुद्धि विवेक का परिचय पहले ही दे दिया था। देश की जनता ऐसे लोगो को जान चुकी है और आगे भी उन्हे जनमानस से उचित जवाब मिलेगा। उन्होने कहा कि इसी प्रकार समाजवादी पार्टी (सपा) भी अपने पुराने अपराध से सनी है। तत्कालीन मुख्यमंत्री और सपा सुप्रीमो स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव ने राम मंदिर के कार सेवकों पर गोली चलवा कर जो अपराध किया था, उसका दंड तो उसे मिलना स्वभाविक है। सपा ने आज तक इसके लिए सार्वजनिक रूप से माफ़ी भी नहीं मांगी है। साध्वी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के कुम्भ स्नान पर प्रसन्नता जताते हुये कहा कि यह उनकी श्रद्धा है। इस पर किसी प्रकार की राजनैतिक स्टंट बाजी नहीं होनी चाहिए। पूर्व केंद्रीय मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने भाजपा द्वारा महोबा के टाउन हाल में आयोजित बजट चर्चा में हिस्सा लिया और मध्यम वर्ग को राहत प्रदान करने वाले बजट के लिए मोदी सरकार की सराहना की।

शादी समारोह में पुष्टाहार विभाग के रिफाइंड तेल प्रयोग मामले में हुई विभागीय जांच

गलती से तेल के प्रयोग की हुई पुष्टि, दिया लिखित माफी नामा

शकुन टाइम्स संवाददाता

गौराबादशाहपुर/ जौनपुर। धर्मापुर ब्लॉक के गजना गांव में बीते दिनों एक शादी समारोह में आंगनबाड़ी द्वारा बाल विकास और पुष्टाहार में मिले रिफाइंड तेल से शादी समारोह में खाना बनाने का फोटो वायरल होने तथा समाचार पत्र में खबर प्रकाशित होने के बाद विभाग ने घटना को संज्ञान में लेते हुए डीपीओ नरेंद्र सिंह के निर्देश पर सीडीपीओ अभिषेक द्विवेदी द्वारा सोमवार को गांव में जाकर जांच की गई। इस संदर्भ में पूछे जाने पर सीडीपीओ अभिषेक द्विवेदी ने बताया कि जांच के दौरान पुष्टि हुई कि गांव निवासी भीमसेन के यहां दो आंगनबाड़ी के लाभार्थी हैं तथा उन्हें मिला हुआ रिफाइंड तेल का प्रयोग गलती से शादी समारोह में कर दिया गया। इस मामले में लिखित माफीनामा देने पर चेतावनी दी गई तथा भविष्य में ऐसा न करने का निर्देश भी दिया गया।

अयोध्या से काशी जा रहे दर्शनार्थियों की कार सड़क किनारे खड़े ऑटो से भिड़ी

औद्योगिक क्षेत्र गाजियाबाद के साहिबाबाद निवासी थे दर्शनार्थी, एयरबैग के चलते बाल बाल बच्चे पांचो यात्री

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। अयोध्या से काशी जा रहे दर्शनार्थियों की एक कार बीती रात खेतासराय कस्बा में सड़क किनारे खड़ी ऑटो से भिड़ंत हो गई ।टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ऑटो एक दीवार को तोड़ते हुए बगल के मकान में घुस गया।

कार में आगे बैठे दोनों लोग एयरबैग के चलते बाल बाल बच गए । वरना किसी बड़ी अनहोनी से इनकार नहीं किया जा सकता था ।हादसे की खबर लगते ही तीन बजे भोर में खेतासराय थानाध्यक्ष रामाश्रय राय भारी पुलिस बल के साथ तत्काल मौके पर पहुंचे। उन्होंने सभी घायलों को कार में से बाहर निकलवाया । उन्हें देर रात को ही प्राथमिक उपचार कराने के बाद गाड़ी को खिंचवा कर थाने ले गये। औद्योगिक क्षेत्र गाजियाबाद जिले के साहिबाबाद मोहल्ला निवासी अमित त्यागी अपनी मारुति सुजुकी कार ह्ब्ब 14 डीई 8675 से अपनी माता-पिता, पत्नी और एक बच्चे के साथ अयोध्या दर्शन गए थे। वहा से फिर बाबा विश्वनाथ की नगरी वाराणसी जा रहे थे । शाहगंज जौनपुर नेशनल हाईवे के खेतासराय कस्बा के जोगियाना मोहल्ला में सोमवार की भोर में तीन बजे पहुंचते ही सड़क पर खड़ी कबाड़ी चिराग जोगी पुत्र अज्जू जोगी की ऑटो में जोरदार भिड़ंत हो गई। कार की स्पीड इतनी तेज थी की ऑटो बगल में रमेश मौर्य के मकान की दीवार तोड़ते हुए उनके घर में घुस गई । दरअसल जोगियाना मोहल्ले में सड़क के बाएं तरफ चिराग जोगी की ऑटो रोज की तरह खड़ी थी । ठीक उसके दूसरी पटरी पर दाएं तरफ फुतुंगू जोगी पुत्र स्वर्गीय रसीद जोगी की ऑटो भी खड़ी थी । इस दौरान जौनपुर की तरफ से शाहगंज जा रहा डम्फर गाड़ी आ गई। डम्फर की तेज रोशनी से कार चालक की आंखें चुधियां गई और वह बाएं खड़े ऑटो में भीड़ गई ।घटना के बाद सूचना मिलते ही खेतासराय थानाध्यक्ष रामाश्रय राय खुद पुलिस बल के साथ बेहद ही तत्परता के साथ मौके पर पहुंच कर सभी को कार में से सुरक्षित निकलवा कर उनके सामान और गाड़ी के साथ थाना परिसर में ले गए। इस संबंध में थानाध्यक्ष श्री राय ने बताया कि नेशनल हाईवे पर सड़क किनारे वाहन खड़ी करने वालों को चिन्हित करके सख्त कार्रवाई की जाएगी।

तीन साल की बालिका के सामने पिता ने मां को लगा दी फांसी, हुई मौत

शकुन टाइम्स संवाददाता

झांसी। उत्तर प्रदेश में झांसी के कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत पंचवटी कालोनी में एक दिल दहलादेने वाली घटना सामने आयी है जहां तीन साल की बालिका ने अपने ही पिता पर मां के साथ मारपीट कर फांसी पर लटकाने की बात कही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मध्य प्रदेश के निवाड़ी निवासी राजू त्रिपाठी की बेटी सोनाली बुधौलिया (28) की शादी पांच साल पहले झांसी कोतवालीथानाक्षेत्र पंचवटी निवासी संदीप बुधौलिया ने हुई थी। पीड़िता के परिजनों का आरोप है कि शादी के बाद से उनकी बेटी के साथ ससुराल पक्ष के लोगों द्वारा लगातार दुर्व्यवहार किया जाता था साथ ही दहेज की मांग भी की जाती थी। इस संबंध में कोर्ट में मामला भी चला । इस मामले में राजीनामा कर वर पक्ष ने बेटी को पूरी प्लानिंग बनाकर घर बुलाया। परिजनों का आरोप है कि सोनाली के बेटी होने के बाद से पति सहित ससुरालियों के व्यवहार में और खराबी आ गयी थी।

रविवार रात को संदीप ने दोस्तों संग शराब पीने के बाद सोनाली के साथ मारपीट की और इसके बाद उसके गले में कपड़ा बांध फांसी पर लटका दिया। परिजनों ने बताया कि संदीप के घर वालों ने बिना पुलिस को सूचना दिये सोनाली को अस्पताल में भर्ती कराया ,जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इतना ही नहीं सोनाली के परिजनों के मेडिकल पहुंचते ही उसके ससुराल के सभी लोग भाग गये। सोनाली के परिजनों ने अस्पताल में जमकर हंगामा किया और संदीप की गिरफ्तारी से पहले शव का पोस्टमार्टम न कराये जाने की मांग पर अड़ गये। इसके बाद पुलिस ने काफी समझाबुझाकर मामला शांत कराया और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व निकाली गई भव्य कलश यात्रा

शकुन टाइम्स संवाददाता

खुटहन /जौनपुर। सहाबुद्दीन उसरौली गांव में चल रही श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के समापन के बाद सोमवार को 51 कन्याओं के द्वारा भव्य कलश यात्रा निकाल नव निर्मित मंदिर में देवी दुर्गा और बजरंगबली की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठित की गई।

स्थापना से पूर्व गाजे बाजे के साथ रथ पर मूर्तियां रख पूरे गांव का भ्रमण कराया गया। पुरोहित सुरेश मिश्रा ने वैदिक रीति से मंत्रोच्चार के साथ कलश पूजन कराया। यज्ञ स्थल से सभी कन्याएं कलश में पवित्र जल भरकर पूरे गांव का भ्रमण किया। कथा वाचक पंडित धर्मराज तिवारी महराज ने कहा कलश और नारी दोनों शक्ति का स्वरूप है।

दोनों का एक साथ पवित्र चित् से साक्षात दर्शन कर लेने मात्र से कई तीर्थों के बराबर शुभ फल मिल जाता है। यज्ञ स्थल पर कलश यात्रा के समापन समापन के बाद मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस मौके पर मुख्य यजमान श्यामसुंदर पाण्डेय, अमरनाथ मिश्रा, भूलेश्वर नाथ मिश्रा,शिव प्रसाद, बीरेंद्र, राधेश्याम उपाध्याय,पवन पांडेय, सुनील,हर्ष आदि मौजूद रहे।

विवाहिता ने मासूम पुत्र संग फंदे से लटक कर दिया जान, जांच में जुटी पुलिस

शकुन टाइम्स संवाददाता

गाजीपुर। करीमुद्दीनपुर थाना क्षेत्र के करकटपुर गांव में सोमवार को मां और उसके 16 माह के बेटे का शव कमरे में लटकता मिला। परिवार के लोगों इसे आत्महत्या बता रहे हैं। जबकि लडकी के पिता और माँ लडकी की हत्या कर शव फन्दे से लटकाये जाने की बात कह रहे है मौके पर पुलिस अधिक्षक ग्रामीण अतुल कुमार व नायब तहसीलदार राहुल सिंह सहित फारेंसी टीम मौके पर पहुंच पर शव को फन्दे से उतारकर कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया। राहुल गौड़ की शादी बलिया जिले की सुखपुरा थान क्षेत्र के गुरवा गाँव की 2021में सलीता (25) के साथ हुई थी। दोनों से ऋषभ 16 माह का पुत्र पैदा हुआ । पति के अनुसार, चार माह पहले वह अपने मायके गई थी। 10 दिन पहले विदाई कराकर लाया था। सोमवार की सुबह 10 बजे वह गांव में घूमने के लिए गया था। जबकि उसकी मां चारा काटने के लिए खेत में गई थी। पिता विजय ऑटो रिक्शा चलाकर घर आए। विजय के अनुसार, उनकी बहू ने खाना खाने के लिए भी दिया, जिसके बाद वह बाहर चले गए। इसी बीच, 11 बजे राहुल घर पहुंचे तो दरवाजा देखा फंदे के सहारे सालिता और उसका 16 वर्षीय बेटा ऋषभ लटके हुए थे शोर मचाने पर आसपास के लोग जुट गए। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। सूचना पाकर मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। जिला मुख्यालय से एएसपी ग्रामीण अतुल कुमार मौके के परीक्षण में लगे हुए थे ।इस सम्बंध मे थानाध्यक्ष करीमुद्दीनपुर वीरेन्द्र कुमार ने बताया की शव कब्जे मे लिया गया है। पोस्टमार्टम के बाद हत्या का कारण का पता चल सकेगा तहरीर मिलते ही मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही किया जायेगा।

बेसिक स्कूलों में रिक्त पदों को तत्काल भरे सरकारः युवा मंच

शकुन टाइम्स संवाददाता

म्योरपुर /सोनभद्र। प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों में बड़ी संख्या में शिक्षकों के पद रिक्त पड़े हुए हैं जिससे पठन-पाठन प्रभावित है। प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों को तत्काल भरने हेतु आज प्रदेशस्तरीय मुहिम के तहत युवाओं ने सोशल मीडिया एक्स प्लेटफार्म पर आवाज उठाई। युवा मंच ने छात्रों की इस मुहिम का समर्थन किया है।

सोनभद्र जैसे पिछड़े हुए इलाकों में शिक्षकों व बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी है। सोनभद्र के 2061 बेसिक स्कूलों में महज 4200 शिक्षक कार्यरत हैं जबकि 10 हजार शिक्षकों की जरूरत है। 129 स्कूलों में तो एक भी नियमित शिक्षक नहीं है। जनपद में इससे भी ज्यादा दयनीय स्थिति माध्यमिक व उच्च शिक्षा की है। शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार जैसे सवालों को लेकर म्योरपुर ब्लाक के गांवों में चलाए जा रहे रोजगार अधिकार अभियान में छात्रों , युवाओं और नागरिकों से जनसंपर्क व संवाद करते हुए युवा मंच जिला संयोजक सविता गोंड व अध्यक्ष रूबी सिंह गोंड ने बताया कि युवा मंच की ओर से सीएम योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर बेसिक स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पड़े 1.26 लाख पदों को तत्काल भरने की मांग की गई है। कहा कि एक तरफ शिक्षा के कायाकल्प का दावा किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर बेसिक स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने से सरकार द्वारा इंकार किया जा रहा है। बार-बार अनुरोध के बावजूद म्योरपुर में राजकीय इण्टर कॉलेज और लड़कियों के लिए आवासीय डिग्री कॉलेज नहीं खोला जा रहा है। प्रदेश में 24 हजार बेसिक स्कूलों को भी बंद कर दिया गया और कई को बंद करने की तैयारी है।

हाल के वर्षों में ही 1.39 लाख शिक्षकों के पदों को भी खत्म कर दिया गया। इसका सर्वाधिक प्रतिकूल असर गरीब व निम्न मध्यम पृष्ठभूमि के बच्चों पर पड़ेगा। इससे बड़ी संख्या में बच्चे बेसिक शिक्षा से वंचित हो जाएंगे। यह सीधे तौर पर शिक्षा अधिकार अभियान - 2009 का उल्लंघन है जिसमें स्पष्ट तौर पर उल्लेख है कि गुणवत्तापूर्ण, मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करना सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है।

ऐनुल हक की याद में गैर तरही नज्मख्वानी का हुआ भव्य आयोजन

अंजुमनों, अरवाड़ों एवं सजावट कमेटियों को किया गया पुरस्कृत

शकुन टाइम्स संवाददाता

जौनपुर। दिनांक 16 फरवरी 2025 को गैर तरही नज्मख्वानी औलिया सीरत कमेटी के तत्वावधान में बायादगार मुजाहिद ए मिल्लत ऐनुल हक उर्फ बुद्धू खां की याद में मोहल्ला बलुआ घाट केरारकोट शहाबा मस्जिद के सामने सम्पन्न हुआ। सबसे पहले हाफिज मेराज सेराजी ने तेलावते कलाम पाक से जलसे का आगाज किया। इसके बाद नाते नबी हनीफ अंसारी असीम जौनपुरी ने पेश किया। पूर्व अध्यक्ष मरकजी सीरत कमेटी अनवारूल हक गुड्डू की अध्यक्षता में हुये जलसे में शहर के तमाम सम्मानित जनों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आये हुये निखिलेश सिंह, जावेद अजीम, व्यापार मण्डल के प्रदेश अध्यक्ष श्रवण जायसवाल, नुरूद्दीन अंसारी व मनोज मौर्या ने लोगों से कहा कि जौनपुर में जिस तरह का आयोजन होता है, इसकी सीख पूरे हिन्दुस्तान में जाना चाहिये। जहां सभी धर्मों के लोग एक साथ बैठक इस तरह का कार्यक्रम करते हैं जिसका हमारा शहर जौनपुर एक ऐतिहासिक शहर है जो गंगा—जमुनी तहजीब की मिसाल है।

जलसे की अध्यक्षता करते हुये अनवारूल हक गुड्डू ने औलिया सीरत कमेटी के लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही कहा कि जिस तरह बुजुर्गों की याद में आज का यह कार्यक्रम किया गया, हम उसके लिये के लिये आभार व्यक्त करता हूं। यह भी कहा कि ?ऐसे किसी भी कार्य के लिये वह सदैव तत्पर रहेंगे। उन्होंने जश्न ए मेराजुन्नबी के जुलूस में शामिल समस्त अंजुमनों, अखाड़ों एवं सजावट कमेटियों के प्रति आभार जताया। जुलूस में शामिल सजावट कमेटी हाजी एण्ड कम्पनी सुतहट्टी बाजार को प्रथम, गुलाम सरवर स.र.अ. चहारसू चौराहा को द्वितीय एवं शाही सजावट कमेटी ख्वाजगी टोला को तृतीय पुरस्कार दिया गया। वहीं जुलूस में शामिल अंजुमन नुरे इलाही उर्दू बाजार को प्रथम, अंजुमन हैदरिया मुल्ला टोला को द्वितीय एवं अंजुमन फैजाने मुस्तफा कलीचाबाद को तृतीय पुरस्कार दिया गया। साथ ही अखाड़ा रज्जब उस्ताद मार्फत मुख्तार उस्ताद मखदूम शाह अढ़न एवं अखाड़ा सहजादे उस्ताद कलीचाबाद को भी सम्मानित किया गया।

इस गैरतरही नज्मख्वानी में अंजुमन हैदरिया मुल्ला टोला, अंजुमन नामुसे शहाबा मुफ्ती मोहल्ला, अंजुमन चारयारी उमर खां बड़ी मस्जिद, अंजुमन नूरे इलाही उर्दू बाजार, अंजुमन महमूदिया ताड़तला, अंजुमन फारूकिया सब्जी बाजार, अंजुमन फैजाने मुस्तफा कलीचाबाद, अंजुमन सैदाये सहाबा चितरसारी, अंजुमन इदरिसिया रौजा अर्जन ने भाग लिया जिसमें प्रथम पुरस्कार अंजुमन फारूकिया सब्जी बाजार, द्वितीय पुरस्कार अंजुमन चारयारी उमर खां बड़ी मस्जिद और तृतीय पुरस्कार अंजुमन महमूदिया दीवान शाह कबीर ताड़तला को दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन औलिया सीरत कमेटी के पूर्व अध्यक्ष कमालुद्दीन अंसारी ने किया। आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष शम्स तबरेज ने कार्यक्रम में आये समस्त लोगों का स्वागत किया।

इस अवसर पर इरशाद मंसूरी, फिरोज अहमद पप्पू, अंसार इदरीसी, अजीज फरीदी, फैज दोनू, सलीम मंसूरी, मो. साबिर राजा नवाब, दानिश अंसारी, अकरम मंसूरी, ऐनुद्दीन अंसारी, अकरम बबलू सहित तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कमेटी के अध्यक्ष शकील मुमताज एवं महासचिव शाहिद मंसूरी ने समस्त अंजुमन कमेटी, अखाड़ों, आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुये कहा कि ?जिन लोगों ने हमारे कार्यक्रम में सहयोग किया है, उसके प्रति मैं कृतज्ञ रहूंगा।

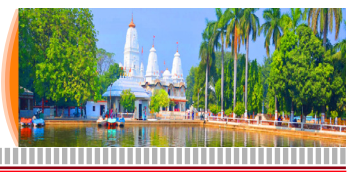

धर्मात्मा निषाद को दी गई अंतिम विदाई

शव आते ही गमगीन हुआ माहौल, छलक पड़े आंसू

शकुन टाइम्स
अरविंद कुमार

गांगी बाजार/महराजगंज। क्षेत्र के ग्राम नरकटहा टोला नरकटहा खुर्द निवासी निषाद पार्टी युवा मोर्चा पूर्व प्रदेश सचिव धर्मात्मा निषाद ने रविवार को सुबह लगभग 9:30 पर आत्महत्या कर लिया था जिसकी शव पोस्टमार्टम के बाद सोमवार को दोपहर लगभग 2:45 उसके घर पहुंचा। सुरक्षा व्यवस्था की कमान सी ओ सदर आभा सिंह एवम् सी ओ निचलौल अनुज सिंह के नेतृत्व में दर्जनों थानों के पुलिस कर्मी दल बल के साथ मौजूद रहे। शव को देखते ही स्वजनों व शुभ चिन्तकों में चीख पुकार मंच गया तथा वहां पर उपस्थित लोग व प्रशासन ने किसी तरह से स्थिति को संभाला। फिर किसी तरह से संभलते हुए स्वजनों ने शव को अन्तिम यात्रा के लिए निकाला जिसके पिछे पिछे सैकड़ों की संख्या में लोग जा रहे थे तथा कुछ शुभचिंतक रो रहे थे तो कुछ धर्मात्मा निषाद अमर रहें, धर्मात्मा निषाद जिन्दाबाद, डा संजय निषाद मुर्दाबाद के के नारे लगा रहे थे। पूरा माहौल गमगीन था। बड़े भाई परमात्मा निषाद ने रोते हुए मुखाग्नि दी। इस दौरान विरेन्द्र सिंह प्रधान, मातादीन निषाद, रामजतन निषाद, अजय निषाद, पंकज निषाद, ओंकार निषाद, नन्दलाल निषाद, रामनयन निषाद सहित सैंकड़ों लोग मौजूद रहे।

डीएम ने मुख्यमंत्री डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक में खराब रैंकिंग पर लगाई फटकार, दिए निर्देश

शकुन टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। सोमवार को जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने सीएम डैशबोर्ड के माध्यम से जिले में चल रही विकास कार्यक्रमों के योजनाओं के रैंकिंग की कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा की। उन्होंने प्रोजेक्टर के माध्यम से विभागवार योजनाओं की स्थिति की जानकारी ली।

उन्होंने एनआरएलएम विभाग, जल निगम विभाग, फैमिली आईडी, पंचायत विभाग, विद्युत विभाग, पर्यटन विभाग, बेसिक शिक्षा विभाग, माध्यमिक शिक्षा विभाग, पशुपालन विभाग, समाज कल्याण विभाग, प्रोवेशन विभाग, पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, सिंचाई विभाग आदि विभागों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने विभागीय अधिकारियों से सीएम डैशबोर्ड पर प्रदर्शित हो रहे एनआरएलएम विभाग, पंचायती राज विभाग, जलजीवन मिशन, पीडब्ल्यूडी विभाग, माध्यमिक शिक्षा विभाग, प्रधानमंत्री किसान सम्मान तथा पशुपालन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि कार्यों का शतप्रतिशत कार्य करते हुए फीडिंग कराकर रैंकिंग में सुधार लायें अन्यथा विभागीय कार्यवाही की जायेगी। समीक्षा बैठक के दौरान सभी संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि सभी लोग अपने-अपने विभागों की सीएम डैशबोर्ड से संबंधित कार्यों/योजनाओं की बराबर समीक्षा करते रहें, ताकि सीएम डैशबोर्ड पर विभाग की रैंकिंग खराब न होने पाए, इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

उन्होंने सभी संबंधित विभाग के अधिकारियों से कहा है कि निरंतर सीएम डैशबोर्ड की निगरानी करते रहें और अपने विभागों की योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान दें, निर्धारित समय अवधि में निस्तारण करें। कहा कि संबंधित विभाग सीएम डैशबोर्ड को गंभीरता से लें।

संक्षिप्त सामाचार

जनता दर्शन के दौरान जिलाधिकारी ने सुनी समास्याएं

श्रावस्ती। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने कलेक्ट्रेट स्थित अपने कक्ष में जनता दर्शन में आमजन की समस्याओं व शिकायतों को सुना। इस दौरान जिलाधिकारी को 15 शिकायतें प्राप्त हुई, जो विभिन्न विभागों से सम्बन्धित थी। इस दौरान जिलाधिकारी के समक्ष खाद्यान्न से सम्बन्धित कुछ फरियादी अपनी शिकायतों को लेकर आये थे, जिस पर जिलाधिकारी ने तत्काल जिला पूर्ति अधिकारी को फोन कर इन शिकायतों का निराकरण करने हेतु निर्देशित किया। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकरण राजस्व वादों से सम्बन्धित थे, जिस पर उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सम्बन्धित प्रकरणों में तत्काल समुचित कार्रवाई कर समस्या का समाधान सुनिश्चित करें। साथ ही कृत कार्रवाई के बाद उन्हें भी अवगत कराना सुनिश्चित करें।

वैवाहिक कार्यक्रम में फूट पाइजनिंग से पांच दर्जन बीमार, दो की हालत खराब

गोंडा। जिले में नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के पटेल नगर मोहल्ले में रविवार की रात आयोजित एक वैवाहिक समारोह में खाना खाने से 50 से अधिक लोग बीमार हो गए। उल्टी दस्त की शिकायत होने पर सभी को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया जहां दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। मामले में पीड़ित परिवार ने खाना बनाने वाले कैटर्स के खिलाफ नगर कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पटेल नगर मोहल्ले के रहने वाले अशोक कुमार जायसवाल के मुताबिक रविवार को उनकी बेटी काजल जायसवाल के इंगेजमेंट का कार्यक्रम था। बहराइच रोड स्थित एक निजी होटल में कार्यक्रम का आयोजन था। समारोह में भोजन बनाने की जिम्मेदारी गुरदीप कैटर्स (बंटी) को सौंपी गई थी। अशोक जायसवाल का कहना है कि कैटर्स द्वारा बनाए गए खाद्य पदार्थों में किए गए मिलावट कारण खाना दूषित हो गया। रात में खाना खाने के बाद वर व वधू पक्ष के 50 से अधिक लोग बीमार पड़ गए। उल्टी दस्त की शिकायत होने और हालत बिगड़ने पर सभी को मेडिकल कॉलेज में ले जाकर भर्ती कराया गया। बीमार लोगों में अशोक की 7 माह की गर्भवती बेटी के अलावा कई बच्चे व बुजुर्ग भी शामिल हैं। बीमारों में दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। फिलहाल मेडिकल कॉलेज में सभी का इलाज चल रहा है।

10 बोटा लकड़ी बरामद, एक आरोपी गिरफ्तार

श्रावस्ती। एसएसबी व वन विभाग की टीम को देर रात बड़ी सफलता मिली। संयुक्त टीम ने जंगल से अवैध कटान कर ले जाई जा रही 10 बोटा लकड़ी के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। एसएसबी ने बरामद लकड़ी व आरोपी को वन विभाग को सुपुर्द कर दिया। 62वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल की सीमा चौकी गुज्जरगौरी के एसएसबी अधिकारियों को रविवार देर रात मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति साइकिल पर अवैध कटान की लकड़ी लादकर जा रहा है। सूचना पश्चिमी सोहेलवा रेंज से साझा की गई। साथ ही एसएसबी के सहायक कमांडेन्ट पियूष सिन्हा के नेतृत्व में टीम गठित कर कार्रवाई का निर्देश दिया गया। जिसके बाद एसएसबी व वन विभाग की संयुक्त टीम ने सीमा पिलर संख्या 631 से करीब डेढ़ किलोमीटर भारतीय क्षेत्र में नाकाबंदी की। कुछ देर बाद एक व्यक्ति साइकिल पर लकड़ी का बोटा लादकर आता दिखा। नजदीक पहुंचते ही टीम ने उसे पकड़ लिया। सख्ती से पूंछताछ कर उसकी निशानदेही पर टीम ने छह बोटा सागौन व 4 बोटा शीशम सहित कुल 10 बोटा लकड़ी बरामद कर लिया।

क्षेपंस की बैठक में विकास कार्यों की हुई समीक्षा

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। क्षेत्र पंचायत की बैठक सोमवार को लक्ष्मीपुर ब्लाक सभागार में आयोजित हुई। जिसमें विभिन्न क्षेत्रों को लेकर विकास कार्य का चर्चा किया गया। आयोजित बैठक में ग्राम पंचायत हरैया तथा वार्ड संख्या 89 से निर्विरोध निर्वाचित क्षेत्र पंचायत सदस्य शेषमन यादव का नौतनवा विधायक ऋषि त्रिपाठी, ब्लाक प्रमुख अंजली पाण्डेय, प्रमुख प्रतिनिधि संतोष पाण्डेय ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। नौतनवां विधायक ऋषि त्रिपाठी ने बधाई देते हुए कहा कि गांव वसियों ने अच्छी सोंच रखते हुए शेषमन यादव को निर्विरोध निर्वाचन किया है। जिसके लिये बधाई देता हूँ। लक्ष्मीपुर क्षेत्र पंचायत प्रमुख अंजली पाण्डेय ने कहा इनके नेतृत्व में गांव के विकास को और रफ्तार मिलेगी और क्षेत्र पंचायत स्तर विकास किया जायेगा। नवनिर्वाचित बीडीसी शेषमन यादव ने कहा विधायक व प्रमुख के आशीर्वाद से गांव में विकास होगा।

जनता के आशा एवं विश्वास पर खरा उतरने का मेरा पूर्ण प्रयास रहेगा। इस दौरान जिला पंचायत सदस्य रामसेवक जायसवाल, विधायक प्रतिनिधि चन्द्रप्रकाश मिश्र सहित सदन क्षेपं सदस्यों सहित ग्राम प्रधानों ने बधाई दी है।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी

शकुन टाइम्स संवाददाता

बलरामपुर। जनपद की एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने सोमवार को पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। सोमवार को संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू ,कोषाध्यक्ष बलराम हालदार के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से जम्मू कश्मीर के पुलवामा में पाकिस्तानी आतंकी हमले में भारतीय सेना के शहीद जवानों की छठवीं पुण्यतिथि पर संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी रामलीला मैदान स्थित डीके पार्क में पुलवामा के शहीदों को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू मार्गदर्शक मदन बिष्ट ने संयुक्त रूप से कहा की पुलवामा आतंकी हमले में शहीद भारतीय सेना के जवानों की बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है । भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत एवं भारतवासियों को हमेशा सुरक्षित रखते है। इसलिए भारतीय सेना के जवान हजारों फुट की ऊंचाई पर अपनी हड्डियाँ गलाकर दुश्मनों की हर हरकत पर पैनी निगाह रखते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देकर दुश्मनों को संभलने तक का मौका भी नहीं देते है । तभी हम अपने अपने घरों में सुरक्षित रहते है और तभी हम अपने सारे त्यौहार पूरी खुशी के साथ मना पाते है ।इसलिए भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है ।

कहा कि एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखती है। और यह हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य भी है। इसी क्रम में पर्यावरण प्रेमी मदन बिष्ट ने पुलवामा के शहीदों के नाम से पौधे वितरण कर लोगों से शहीदों के नाम पर पौधारोपण करने का आग्रह किया। दौरान पुलवामा के शहीदों को श्रद्धांजलि देने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू कोषाध्यक्ष बलराम हालदार मार्गदर्शक मदन बिष्ट प्रीती आर्या समाजसेवी तरुण सक्सेना सचिन गुप्ता हेमन्त कुमार साहू आशीष मेहरोत्रा राशि जैन जया जोशी योगिता बनोला सुमन वार्ष्णेय रवि गुप्ता मनीष पंत धर्मेंद्र साहू दीपा रावत रेखा बलूनी कुसुम बोरा प्रियंका देवल मन्ना परगई दीपा नेगी खुशी नागर श्रुति तिवारी श्याम भारती नन्दकिशोर आर्या संजू राजपूत अरविंद कुमार निखिल साहू संदीप यादव महेश साहू रमेश आर्या चन्दन आर्या सूरज मिस्त्री रोहतास प्रजापति दीपक कुमार जानकी कश्यप अमित गोस्वामी जवाहर लाल महेश्वरी दलजीत सैनी मोनू कुमार रोहित भण्डारी सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

सभी के सहयोग से टीबी पर होगा नियंत्रण: फतेह बहादुर सिंह

शकुन टाइम्स संवाददाता

पीपीगंज/गोरखपुर। समाज में एक दूसरे के सहयोग से टीबी को हराया जा सकता है। ये बातें प्राथमिक विद्यालय बगहीभारी में एक कक्षीय भवन एवं स्मार्ट क्लास के लोकार्पण कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कैंपियरगंज के विधायक फतेह बहादुर सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि टीबी छुआछूत की बीमारी नही है। ये एक दूसरे को छुने से नही होता ।इसलिए किसी भी टीबी मरीज के साथ भेदभाव नही करना चाहिए। बल्कि उसका सहयोग करना चाहिये. सरकार सभी मरीजों को निशुल्क दवा उपलब्ध करा रही है। टीबी उन्मूलन के लिए आयोजित कार्यक्रम में रैली को हरी झंडी दिखाकर विधायक ने रवाना भी किया। कार्यक्रम में बेसिक शिक्षा अधिकारी रमेंद्र प्रताप सिंह, खंड शिक्षा अधिकारी नीलम, पीपीगंज चेयरमैन लक्ष्मण विश्वकर्मा, मंडल अध्यक्ष पशुपतिनाथ अग्रहरि, कैंपियरगंज ब्लॉक प्रमुख अश्वनी जायसवाल, निवर्तमान मंडल अध्यक्ष राकेश चौधरी, विधायक प्रतिनिधि रघुनाथ सिंह, सभासद सिब्बन पासवान, मंटू सिंह, शनि जायसवाल, शशिभूषण पासवान, प्रदीप छापडिया, गुड्डू रावत, रंजित सिंह पिंटू, अखिलेश जायसवाल आदि लोग उपस्थित रहें।

चीनी मिल में ट्रैक्टर पहले ले जाने को लेकर चटकी लाठियां

बहराइच। जिले के पारले चीनी मिल परसेंडी में गन्ना लदी ट्रैक्टर ट्रॉली पहले ले जाने को लेकर चालकों में मारपीट हो गई और लाठी-डंडे चलने लगे। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। फखरपुर थाना क्षेत्र के परसेंडी में पारले चीनी मिल स्थित है। मिल में इस समय गन्ना पेराई का कार्य चल रहा है, जिसमें किसान निजी और भाड़े के साधन से गन्ना ले जा रहे हैं। सोमवार को गन्ना लदी ट्रैक्टर पीछे करने और पहले गन्ना ले जाने को लेकर दो चालक भिड़ गए। कहासुनी के दौरान चालक और उनके समर्थकों के बीच लाठी-डंडे चलने लगे। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है ।मारपीट की सूचना

पैथोलॉजी लैब खुलने से रोगियों को त्वरित मिलेगा परिणाम: पूर्व विधायक

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। पैथोलॉजी लैब खुलने से रोगियों को तुरन्त मिलेगा परिणाम एवं कई तरह के फायदा मिलेंगा, उक्त बातें पूर्व विधायक फरेंदा शिवेंद्र सिंह चौधरी ने सोमवार को फरेंदा बैंक रोड आनन्दनगर पर स्थित (सागर ई .सी. जी.) पैथोलॉजी लैब के उद्घाटन के पश्चात कहीं। उन्होंने कहा कि लैब के आधुनिक उपकरणों से ब्लड टेस्टिंग के दौरान रोगियों को सटीक और त्वरित परिणाम मिलता हैं जिससे बीमारियों का पता चलता है एवं उसका निदान भी होता है। अम्बरीश राव लल्लन ने कहा कि लैब के आधुनिक उपकरणों से रोगियों का इलाज बेहतर होता है उन्हें संतुष्टि भी मिलती हैं। इस दौरान उपेंद्र यादव, अश्वनी, अभिषेक, राजू, शुभम, प्रो.सागर व मनीष चौधरी सहित तमाम लोग रहें।

पुलिस चौकी के पास युवक ने खुद पर पेट्रोल छिड़क लगाई आग, लखनऊ रेफर

शकुन टाइम्स संवाददाता

बलरामपुर। जिले में दिल दहलाने वाला मामला सामने आया है। शनिवार की रात करीब 10.30 बजे महदेया पुलिस चौकी के पास एक युवक ने खुद पर पेट्रोल छिड़ककर आग लाग ली। इससे वह गंभीर रूप से झुलस गया। उसे बचाने के चक्कर में पुलिस चौकी पर तैनात दीवान औरंगजेब भी झुलस गया। पुलिस ने उसे जिला संयुक्त अस्पताल लेकर पहुंची। वहां हालत नाजुक देखते हुए मेडिकल कॉलेज लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया। मामला श्रीदत्तगंज थाना क्षेत्र के मुजहनी गांव का है। गांव निवासी अनिल कुमार यादव उर्फ टिंकू (30) शनिवार रात करीब 8 बजे घर निकला था। रात करीब 12 बजे पुलिसवाले घर आए। बताया कि अनिल को चोट लगी है। घर में उसकी बुआ सोना देवी थीं। करीब 12.30 बजे चार पहिया से पुलिस आई। बुआ को यह बताकर लेकर चली गई, कि अनिल झुलस गया है। उसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। अनिल की भाभी मंजू देवी ने बताया कि लखनऊ से किसी का फोन रविवार को आया कि उनकी बुआ और देवर अनिल मेडिकल कॉलेज में हैं। अनिल ने तेजाब डाल लिया है। वह गले तक झुलस गया है। उसका इलाज चल रहा है। सब ठीक है। आप परेशान न हों। बुआ साथ में हैं। बुआ सोना देवी से बात करा दी। अनिल की भाभी ने इतना जरूर बताया कि किसी बात को लेकर अनिल शनिवार की रात घर से बाहर गया था। अनिल की शादी हुई थी, लेकिन उसकी पत्नी साथ छोड़कर चली गई है। चार साल का बेटे की देखभाल वही कर रहा है। उसके माता-पिता का भी निधन हो चुका है। पत्नी के मामले से वह काफी परेशान रहता था। अनुमान है कि वह पत्नी के मामले में ही पुलिस के पास गया था, या कोई और बात है। पुलिस के मुताबिक अनिल ने पत्नी की गुमशुदगी की रिपोर्ट एक साल पहले दर्ज कराई थी, जिसमें उसकी पत्नी को बरामद कर एसडीएम न्यायालय पर पेश किया गया। जहां पर पत्नी के बयान पर कार्रवाई हुई थी, उसमें उसकी पत्नी दूसरे वाले व्यक्ति के साथ ही चली गई थी। पुलिस उपाधीक्षक उतरौला राघवेंद्र सिंह ने बताया कि पत्नी के विवाद तो था ही, अनिल का एक व्यक्ति वहीद से भी कुछ दिनों पहले विवाद हुआ था।

हमारा आंगन, हमारे बच्चे कार्यक्रम का आयोजन हुआ

शकुन टाइम्स संवाददाता

महराजगंज। सोमवार को फरेंदा क्षेत्र के सम्राट पैलेस में हमारा आंगन, हमारे बच्चे , के तहत कार्यक्रम आयोजित हुई। आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फरेंदा बीडीओ के के शुक्ल रहें। उन्होंने कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प धूप दीप प्रज्वलित पर कर किया। खंड शिक्षा अधिकारी फरेंदा सुदामा प्रसाद ने स्वागत किया। इस आयोजित कार्यक्रम के उद्देश्यों के विषय पर विस्तार पूर्वक उन्होंने चर्चा किया। आयोजित कार्यक्रम में भगवत नगर परसिया कंपोजिट विद्यालय के प्रधानाचार्य अरविन्द कुमार गौड़ के उपस्थित में विद्यालय की छात्र को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया। इसी क्रम में कुल पांच बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान विजय प्रताप पांडेय अध्यक्ष, पंकज पांडेय रितेश राय,प्रमोद यादव,अनिल कुमार, दुर्गेश पांडेय,सतीश सिंह, अजय व अध्यक्ष विनीत चौधरी, मुन्नी चौधरी, आरती सहित तमाम लोग रहीं।

गेहूं खरीद के लिए 13 नये क्रय केन्द्र का चयन

श्रावस्ती। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार रबी विपणन वर्ष 2025-26 के लिए गेहूं क्रय केन्द्रों का प्रस्ताव प्रेषित किए जाने के निर्देश हैं। जिसके तहत पूर्व में 34 क्रय केन्द्रों का अनुमोदन पूरा हो चुका है। इसी क्रम में 13 और क्रय केन्द्रों का चयन किया गया है। नए बनाए गए केन्द्रों में पीसीएफ के छह, एनसीसीएफ के तीन क्रय केन्द्र व भारतीय खाद्य निगम के चार केन्द्र का प्रस्ताव प्रेषित किया गया है। जिसमें तहसील भिनगा के तहत बी-पैक्स मोहम्मदपुर कला, बी-पैक्स सलारपुर, सहकारी संघ लक्ष्मनपुर बाजार, मण्डी श्रावस्ती एवं तिलकपुर में बनाया गया है। इसके अलावा तहसील इकौना में बी-पैक्स परेवपुर, सतीश वेयर हाउस पीईजी गिलौला, गौरव वर्मा पीईजी गिलौला व कल्याणपुर तथा तहसील जमुनहा में बी-पैक्स लक्ष्मनपुर सेमरहनिया, मल्हीपुर चौराहा व हरदत्तनगर गिरंट में क्रय केन्द्र बनाया गया है।

एथलेटिक्स प्रतियोगिता में श्रावस्ती ने जीता 36 मेडल

साइकिलिंग में महिला और पुरुष दोनों वर्ग की टीम रही विजेता

शकुन टाइम्स संवाददाता

श्रावस्ती। सिद्धार्थनगर जनपद के पुलिस लाइन्स में 73 वीं अंतर जनपदीय गोरखपुर जोन एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका आयोजन 14फरवरी से 16 फरवरी तक तीन दिवसीय रहा। जिसमें श्रावस्ती की पुलिस टीम ने कुल 36 मेडल जीते। साथ ही साइकिलिंग में श्रावस्ती की महिला और पुरुष दोनों टीमें विजेता बनी। वहीं एथलेटिक्स(महिला/पुरुष) दोनों में श्रावस्ती उपविजेता रही।

एसपी घनश्याम चौरसिया ने बताया कि प्रतियोगिता में गोरखपुर जोन की कुल 11 टीमों ने प्रतिभाग किया। जिसमें श्रावस्ती की महिला व पुलिस टीम शामिल रही। उन्होंने बताया कि एथलेटिक्स प्रतियोगिता में श्रावस्ती पुलिस ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए साइकिलिंग व एथेलेटिक्स प्रतियोगिता 2025 में श्रावस्ती पुलिस ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 19 गोल्ड, 10 सिल्वर, 07 ब्रान्ज सहित कुल 36 मेडल जीते हैं। बताया कि श्रावस्ती पुलिस दोनों वर्गों में साइकिलिंग (महिला व पुरुष) में विजेता तथा एथलेटिक्स(महिला व पुरुष) में उपविजेता रही है। उन्होंने बताया कि पुरूष वर्ग में हैमर एवं डिस्क्स थ्रो में मुख्य आरक्षी रवीन्द्र कुमार(पीटीआई) ने 02 गोल्ड मेडल व गोला फेंक में 01 सिल्वर मेडल प्राप्त किया है। आरक्षी गोविंद ने साइकलिंग व 05 किलोमीटर दौड़ में 02 गोल्ड मेडल व रिले दौड़ में 01 सिल्वर मेडल, आरक्षी अख्तर आलम जैवलिन थ्रो में 01 कांस्य व रिले दौड़ में 02 सिल्वर, आरक्षी गौरव 03 किलोमीटर, 1500 मीटर दौड़ में 02 कांस्य वह 400 मीटर रिले दौड़ में 01 सिल्वर, आरक्षी चंदन 10 किलोमीटर दौड़ में 01 कांस्य, आरक्षी जगदीश राणा 400 मीटर रिले दौड़ में 01 सिल्वर, आरक्षी अजय 20 किलोमीटर वॉक चाल में 01 कांस्य मेडल प्राप्त किया है। उन्होंने बताया कि पुरुष के साथ- साथ महिला टीम ने भी बेहतर प्रदर्शन करते हुए महिला आरक्षी नेमवती व 400, 800, 1500, 3000, 5000 मीटर दौड़ में 06 गोल्ड मेडल व 400 मीटर रिले दौड़ में 01 सिल्वर मेडल, महिला आरक्षी मायावती ने 100 मीटर दौड़, 110 मीटर बाधा दौड़, 400 मीटर दौड़ व साइकलिंग में (01-01) कुल 05 गोल्ड मेडल, 400 मीटर रिले दौड में 01 सिल्वर तथा लॉन्ग जंप में 01 कांस्य, महिला आरक्षी पूजा मिश्रा हैमर थ्रो व 400 मीटर रिले दौड़ में 02 गोल्ड मेडल, अपराजिता दुबे 10 किलोमीटर वॉक चाल में 01 गोल्ड मेडल, महिला आ0 रानी साइकलिंग व 400 मीटर रिले दौड़ में एक गोल्ड व 01 सिल्वर मेडल,म0 आ0 रितु पांडे 400 मीटर रिले दौड़ में एक सिल्वर मेडल प्राप्त किया। वही महिला वर्ग की एथलेटिक्स व साइकिलिंग प्रतियोगिता में 01-01 शील्ड व पुरुष वर्ग की साइकिलिंग प्रतियोगिता में 01 शील्ड प्राप्त किए हैं। जबकि एथलेटिक्स व साइकिलिंग प्रतियोगिता 2025 मे श्रावस्ती पुलिस के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए गोरखपुर जोन में श्रावस्ती पुलिस का मान बढ़ाया जिसके उपलक्ष्य में पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया ने सम्मान समारोह का आयोजन कर सभी खिलाड़ियों को स्वयं मेडल पहनाते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी। इस दौरान सोमवार को पुलिस अधीक्षक द्वारा सम्मान समारोह के दौरान बताया गया कि एथलेटिक्स व साइकिलिंग प्रतियोगिता में सभी ने प्रतिभाग कर मेहनत व लगन से उच्च कोटि का प्रदर्शन किया गया जिससे जनपद पुलिस का सिर गर्व से ऊंचा हो गया है, और वह ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप लोग अपने मेहनत और लगन से ऐसे और आगे अधिक बेहतर प्रदर्शन करते हुए आने वाले लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत बने।

कलम से लोगो की तकदीर बदल जाती है- ओमप्रकाश

भागीदारी महासंकल्प रैली में बोले कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर

शकुन टाइम्स संवाददाता

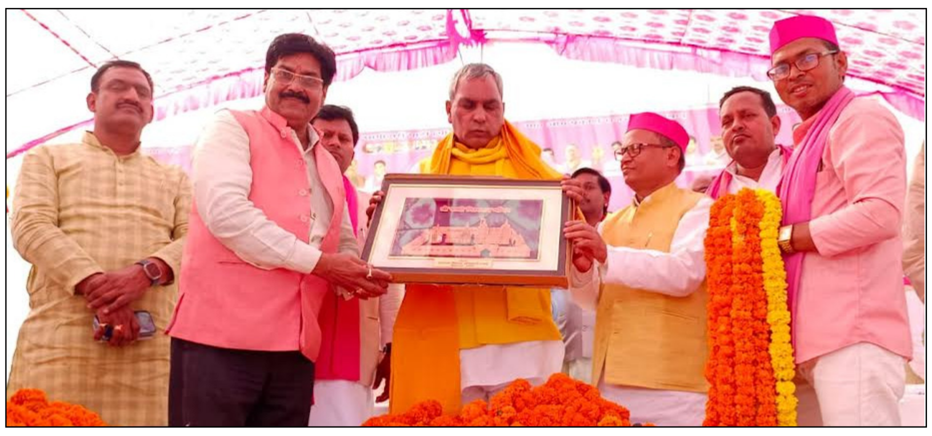

चहनियाँ/चंदौली। क्षेत्र के सेमरा गांव में भागीदारी पार्टी (पी) के चतुर्थ स्थापना दिवस पर भागीदारी संकल्प महारैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष,पंचायती राज्य मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने महात्मा प्रजापति संत राम बी, ए, के तैल चित्र पर माल्यार्पण-द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुभारंभ किया । एडीओ पंचायत अधिकारी राकेश दिक्षित व आयोजक भागीदारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचन्द्र प्रजापति और राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव महेश चंद्रा प्रजापति ने पंचायत राज्य मंत्री को अंगवस्त्रम व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि कलम से लोगो की तकदीर बदल जाती है बस इसका सही उपयोग करे कलम के ऊपर ढक्कन न बने। अपनी तकदीर बनाये। कार्यक्रम आयोजक से आग्रह है कि इनके जीवन की ब्रितान्त छोटी-छोटी पुस्तक कम से कम पांच हजार छपवा कर बंटवाये । ताकि पढ़े लिखे लोग इनकी जीवनी को पढ़े संत राम बी ए के बारे में पढ़े लिखे लोग जाने । जो समाज अपने इतिहास को नही जानता, बुजुर्गों को नही जानता वो कभी तरक्की नही कर सकता है। हम अपने समाज के सुहेलदेव हर कोई जानता है । हमको आपको जानकारी नही है कि लड़ाई कैसे लड़ी जाती है। दुश्मन को दूध पिलायोगे तो किसको मारेगा। हमी को मारेगा। हम यहां कार्यक्रम कर रहे है बड़े बड़े धुरंधरों को पसीना आ रहा होगा । हमारी आबादी बहुत है, हम यदि चुनाव में एक रहे होते तो यहां की तस्बीर कुछ और होती । लेकिन हमारे भाई ही दुश्मन के पाले में चले गए । दुश्मन को ताकत दे दिये। सदन में हम अपने लोगो के लिए लड़ाई लड़ते है विधान सभा के चुनाव में जब हम जाते है तो हर पार्टी की निगाह हमारे ऊपर होती है। हम पश्चिम बंगाल गये थे तो लोगो ने कहा था कि आप केवल एक महीने यहां रह जाइये तो यहां की सरकार बदल जायेगी। बिहार में भी चुनाव में हम गये तो वहां पर लोगो के बीच बुलाया गया बस आप संगठित रहिये। सरकार हर सम्भव प्रयास कर रही है कि आप लोगो तक सुविधा पहुचे अब आप लोगों को गांव में पंचायत भवन पर सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को जानकारी देते हुए आनलाइन फार्म बहा बैठे जानकारी लेते हुए जन्म, परिवार रजिस्टर, मृत्यु प्रमाणपत्र, विधवा, विकलांग सामुहिक विवाह आदि आनलाईन थाने का एफआइआर फार्म पंचायत सहायक से भर सकते हैं। इस अवसर पर पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष छत्रबली सिंह,डीपीआरओ नीरज सिन्हा, खंड विकास अधिकारी प्रकाश प्रसाद,एडियो पंचायत राकेश दीक्षित, ग्राम पंचायत अधिकारी आंनद यादव,जागृति यादव,आशुतोष सिंह,मनोज कुमार, ज्ञानेंद्र कुमार, विद्या यादव, अतुल यादव, ग्राम प्रधान अजय यादव,सुमन प्रजापति, हंसराज प्रजापति आदि लोग उपस्थित रहे। संचालन शशि प्रजापति ने किया।

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की पुण्य तिथि मनाई गई

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां/चंदौली। चहनियां स्थित कार्यालय पर भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की पुण्ड तिथि समारोह पूर्वक मनायी गयी। प्रगतिशील नाई विकास समिति के पदाधिकारियों ने कर्पूरी ठाकुर के तैल चित्र पर माल्यार्पण करके कार्यक्रम की शुरुआत किया। इस अवसर पर प्रगतिशील नाई विकास समिति के अध्यक्ष बुलबुल सलमानी ने कहा कि जननायक कर्पूरी ठाकुर बिहार में दो बार मुख्यमंत्री के पद पर रहकर गरीबो की सेवा किये। जो रिक्शा चलाते थे और झोपड़ी में रहकर जीवन यापन करते थे। विहार में इन्हें गरीबो का मसीहा भी कहा जाता था। इनके कार्यो से जनता खुश होकर कई कई दशकों तक इन्हें विधायक बनाये रखा। ये नाई समाज मे पैदा हुए किन्तु समाज मे आजादी दिलाने का कार्य किया। इनके ईमानदारी की आज भी मिसाल दिया जाता है। इस अवसर पर हीरा शर्मा,गोरख शर्मा,जय प्रकाश शर्मा,विनय शर्मा, बाबू लाल शर्मा,राजेश शर्मा,संजय शर्मा,पवन आदि उपस्थित रहे। अध्यक्षता बसंत शर्मा ने किया।

पंचायत सहायकों ने अपने मांगो को लेकर पंचायती राज्य मंत्री को सौंपा ज्ञापन

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियाँ/चंदौली। सेमरा में पंचायत सहायकों ने मिलकर पंचायती राज्य मंत्री ओम प्रकाश राजभर को 4 सूत्रीय मांग पत्र सौंपा और अपनी आवाज बुलंद की। पंचायत सहायक संगठन के अध्यक्ष राजकुमार यादव ने पंचायत राज्य मंत्री को बताया कि दिसंबर 2021 में प्रदेश सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों में पंचायत सहायक/ एकाउंटेंट कम डाटा इंट्री ऑपरेटर की नियुक्ति की गई थी। सरकार की मंशा थी कि ग्रामीणों को ब्लॉक और जिला मुख्यालयों के चक्कर न लगाना पड़े और उन्हें सभी सुविधाएं ग्राम पंचायत में ही मिले जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों तक सही तरीके से मिले । पंचायत सहायक मात्र 6000 रुपए के अल्प मानदेय पर कार्य कर रहे है जो कि पारिवारिक और आर्थिक जरूरतों के हिसाब से बहुत कम है और इसके अलावा मानदेय मानदेय समय पर भुगतान न होने से पंचायत सहायकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है । संगठन की मांग है पंचायत सहायकों का मानदेय 6000 से बढ़ाकर 26910 रुपए ग्राम निधि से हटाकर राज्य प्राषित किया जाए, अनुबंध प्रणाली को समाप्त करके हुए पंचायत सहायकों को नियमावली बनाई जाय, महिला पंचायत सहायक के लिए स्थानांतरण नीति लागू किया जाए।

पंचायत सहायक ग्राम पंचायत अधिकारी के समान कार्य कर रहे तो ग्राम पंचायत अधिकारी के रिक्त पदों की भर्तियों में 50 प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया जाए। तथा निश्चित समयानुसार भुगतान किया जाए पंचायतों में स्टेशनरी और अन्य जरूरी सामग्रियों की आपूर्ति सुनिश्चित किया जाए और हम पंचायत सहायकों से वही कार्य लिया जाए जो शासनादेश में उल्लेखित है और पंचायत सहायकों से हर विभाग का काम लिया जा रहा है और उस काम को महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। पंचायत सहायकों ने कहा कि यदि उनकी मांगो पर जल्द ही जल्द विचार नहीं किया गया तो वे आंदोलन करेंगे। और लखनऊ में अपनी मांगो को लेकर धरना प्रदर्शन करेंगे। इस दौरान पंचायत सहायक अध्यक्ष राजकुमार यादव, अजय गुप्ता, आनंद मौर्य, शुभम यादव, गुलशन नंदा,प्रशांत, धर्मेंद्र , मदन, संजय, नवीन, सीताराम सौरभ, अशोक, सूरज ,वंदना, नीलम, सपना, सीमा, प्रिंयका,अंजली ,छाया, अर्चना, गुड़िया श्वेता,रंजना आदि पंचायत सहायक मौजूद रहे।

संक्षिप्त सामाचार

बकेवर थाना पुलिस ने बांछितों को गिरफ्तार कर जेल भेजा।

बकेवर। थाना पुलिस ने अलग अलग गांवो से लम्बे समय से मुकदमो में बांछित चल रहे तीन वारन्टियो को पकड़कर न्यायालय में पेश किया। प्रभारी निरीक्षक बकेवर भूपेंद्र सिंह राठी ने बताया कि थाना क्षेत्र के ग्राम लुधियानी निवासी अनिल कुमार पुत्र श्याम लाल,ग्राम पटियन निवासी शिव राज पुत्र जगदीश के अलावा ग्राम मडैया मल्लाहन निवासी किशन सिंह पुत्र नाथूराम लम्बे समय से न्यायालय से गैर हाजिर चल रहे थे पुलिस ने तीनो बांछितो को पकड़कर न्यायालय में पेश किया।

तीन वारंटी गिरफ्तार

बकेवर/ इटावा। थाना पुलिस ने अलग अलग गांवो से लम्बे समय से मुकदमो में बांछित चल रहे तीन वारन्टियो को पकड़कर न्यायालय में पेश किया। प्रभारी निरीक्षक बकेवर भूपेंद्र सिंह राठी ने बताया कि थाना क्षेत्र के ग्राम लुधियानी निवासी अनिल कुमार पुत्र श्याम लाल,ग्राम पटियन निवासी शिव राज पुत्र जगदीश के अलावा ग्राम मडैया मल्लाहन निवासी किशन सिंह पुत्र नाथूराम लम्बे समय से न्यायालय से गैर हाजिर चल रहे थे पुलिस ने तीनो बांछितो को पकड़कर न्यायालय में पेश किया।

जान से मारने की धमकी का मामला दर्ज

बकेवर/ इटावा! लखना कस्बे में नामजद आरोपित तीन भाइयों ने एक महिला किसान के खेतों में पानी भरकर फसल नष्ट कर उसे जान से मारने की धमकी का मामला पुलिस ने ढाई सप्ताह बाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर दर्ज कर जांच शुरू की। लखना कस्बे के कालिका मोहल्ला निवासी मुन्नी देवी पत्नी सुरेश ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि वह 31 जनवरी को अपने खेतों पर गई तो वहां उसने देखा कि खेतों में पानी भरा हुआ था।

और उसकी तकरीबन 25 हजार रुपए मूल्य की फसल पानी में डूबकर नष्ट हो गई। उसने जानकारी की कि खेतों में पानी किसने भरा तो उसमें संदीप, दिलीप राजीव पुत्रगण सोने लाल के नाम प्रकाश में आए जिसपर वह उनके पास उलहाना देने गई तो नामजद आरोपितों ने उसके साथ गाली-गलौच की और मारने का प्रयास भी किया। इसी दौरान मोहल्ला के लोग मौके पर आए तो आरोपित जान से मारने की धमकी देकर चले गए। पुलिस ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

इलाज के दौरान किसान की मौत

बकेवर/इटावा। थाना क्षेत्र के नेशनल हाइवे पर 32वर्षीय घायल युवक की इलाज के दौरान पीजीआई सैफई में 5दिन बाद मौत हो गई। अस्पताल की सूचना पर पहुँची पुलिस ने मृतक युवक का शव कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए इटावा भिजवा दिया। थाना क्षेत्र के ग्राम कर्वाखेडा निवासी राम प्रकाश का 32वर्षीय पुत्र विक्रम सिंह 12फरवरी को ग्राम परशुपुरा के पास सिक्स लेन हाइवे पार कर अपने घर जा रहा था कि उसी समय इटावा की ओर से तेज गति से आ रहे आटो चालक ने युवक के टक्कर मार दी थी जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और गंभीर रूप से घायल युवक को इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया था जहाँ इलाज के दौरान हालत में सुधार न होने के कारण युवक विक्रम सिंह की पीजीआई सैफई में रविवार को मौत हो गई। अस्पताल की सूचना पर बकेवर उपनिरीक्षक विनीत पाण्डेय पीजीआई सैफई पहुँचे और मृतक युवक का शव कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए इटावा भिजवा दिया।

बंदरों के आतंक से जिलेभर के लोग परेशान

शकुन टाइम्स संवाददाता

चंदौली। जिले में इन दिनों बंदरों के महाझुंड से सैकड़ों गांव के लोगो में डर का माहौल है। उनके आतंक से ग्रामीण पूरी तरह से सहमे में है। लोगो का कहना है कि इस बात की शिकायत वन विभाग से किया गया था। लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। इसको लेकर ग्रामीणों में भारी रोष व्याप्त है। सकलडीहा, धानापुर, चहनियां, ताराजीवनपुर, सदलपुरा, ककरही खुर्द, संघति सहित अन्य क्षेत्रों के गांवों में लगभग पिछले एक सप्ताह से दर्जनों बंदर डेरा डाल रखे हैं।

आए दिन गांव में उत्पात मचा रहे हैं। अब तक लगभग दो दर्जन लोगों को काट कर चोटिल भी कर चुके हैं। इसकी शिकायत भी कई बार विभागीय अधिकारियों से की गई। लेकिन इस पर कोई पहल नहीं की गई।लेकिन इस पर कोई ठोस पहल नहीं किया गया।

जिसको लेकर बंदरों का आतंक दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि शहर से बंदरों को पड़कर पिछले महीना ककरही गांव के समीप रिंग रोड पर रात के समय छोड़ दिया गया।अब यह बंदर गांव में आकर उत्पात मचाए हुए हैं। यहां तक की दुकानदारों के साथ-साथ गांव में घरों के छतों पर झुंड के झुंड पहुंच जा रहे हैं।

जिससे ग्रामीणों का छतो पर जाना दुश्वार कर दिया है। छतो के रास्ते घरों में भी पहुंच कर खूब उत्पाद मचा रहे हैं। सरकार द्वारा बंदरों को पकड़ने की जिम्मेदारी संबंधित ग्राम प्रधान व संबंधित नगर पंचायत को दी गई है। वन विभाग को इससे मुक्त कर दिया गया है।

डिलाइट कोचिंग संस्थान में फेयरवेल पार्टी का आयोजन

शकुन टाइम्स संवाददाता

चहनियां। डिलाइट क्लासेज संस्थान रामगढ़ में रविवार को विदाई समारोह का भव्य आयोजन हुआ। जिसमे बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अभय यादव पीके व विशिष्ट अतिथि प्रधानाध्यापक प्रा0 वि0 शरदचंद यादव रहे, आये हुए अतिथियों का संस्थान प्रबंधक अफरोश अहमद द्वारा अंगवस्त्रम व स्मृति चिन्ह देकर सम्मनित किया गया। समारोह में दसवीं और बारहवीं वर्ग के छात्र-छात्राओं को विदाई दी गई।

इस अवसर पर छात्रों को भी उपहार भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि अभय यादव पीके ने कहा की डिलाइट संस्थान लगातार शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है। उन्हें पूरी उम्मीद है की इस वर्ष भी उनके संस्थान के बच्चे पहले

से भी बेहतर प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने सभी बच्चों को शुभकामनाएं दी। आगे बताते हुए उन्होंने यह भी कहा कि संस्थान बच्चों को सिर्फ बेहतर शिक्षा ही नहीं बेहतर संस्कार भी प्रदान करता है। ताकि वह सिर्फ अपने परीक्षा में नहीं बल्कि अपने जीवन व अपने समाज में भी एक बदलाव ला सके। वहीं विशिष्ट अतिथि प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक शरदचंद्र यादव ने बच्चों को शिक्षा की नई नई सीख दी तथा बताया कि जीवन में कभी भी इमानदारी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। तैयारी में कोई चूक नहीं करनी चाहिए।अभी आप दसवीं की परीक्षा में शामिल होने जा रहे हैं,यही सफलता की पहली सीढ़ी होती है। बच्चो के अच्छे भविष्य की मंगल कामना करते हुए बधाई दिए। इस अवसर पर छात्र हर्षित पाण्डेय ने बताया गया कि पासआउट होकर कोचिंग संस्थान की कमी महसूस होती रहेगी। वही लालजी गर्ल्स इंटर कालेज के डायरेक्टर राजन सिंह ने कहा की शिक्षा की पहली सीढ़ी माँ होती है । उन्होंने सभी शिक्षकों का धन्यवाद भी किया। पुराने बच्चों को विदा करते हुए डिलाइट क्लासेज के संचालक मुहम्मद अफरोज अहमद ने उज्वल भविष्य की कामना की वहीं स्टूडेंट ऑफ द ईयर का अवॉर्ड अमन कन्नौजिया को दिया गया। इस मौके पर मुख्य रूप से राजन सिंह राजेंद्र प्रसाद, प्रभुनाथ पांडेय,सुरेश चौरसिया, मुहम्मद रफीक,संदीप यादव, मुकेश साहनी,राजन सिंह, सरोज पाण्डेय अखिलेश यादव,रवि पाल,रामकुमार साक्षी पांडेय साक्षी यादव आयुषी यादव सोनी चौधरी तथा संस्था के समस्त कर्मचारी गण मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालक राजेश कुशवाहा ने किया।

एनएमजी इंटर कॉलेज में आयोजित हुआ विदाई समारोह

सिकन्दरपुर/बलिया। एनएमजी इण्टर कॉलेज में सोमवार को इंटरमीडिएट की छात्राओं का विदाई समारोह आयोजित हुआ। इसका शुभांरभ कॉलेज के मैनेजिंग इंचार्ज नजरुलबारी ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण कर किया। छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कॉलेज के मैनेजिंग इंचार्ज नजरुलबारी ने विद्यार्थियों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने अपने शिक्षा काल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और भविष्य में भी वे इसी तरह सफलता प्राप्त करेंगी। तनाव मुक्त रहकर अपनी परीक्षा की तैयारी हेतु प्रेरित किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य सन्तोष शर्मा ने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि उन्हें आगामी बोर्ड परीक्षा में विद्यालय की गरिमा के अनुरूप परिणाम लाकर अपने माता-पिता और गुरुजनों को गौरवान्वित करना चाहिए। इस अवसर पर इंटरमीडिएट की समस्त छात्राओं ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए अपने अनुभव साझा किये।

रेलवे स्टेशन बना दलालों का अड्डा टिकट दलालों के सामने यात्री पस्त

शकुन टाइम्स संवाददाता

जमानिया। रेलवे स्टेशन परिसर में टिकट को लेकर हुए विवाद ने मारपीट का रूप ले लिया, जिससे स्टेशन पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों के अनुसार, स्टेशन पर टिकट दलालों और यात्रियों के बीच अक्सर इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, लेकिन रेलवे प्रशासन द्वारा इस पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही है। पीड़ित के अनुसार, स्टेशन बाजार निवासी विकास चौधरी (25 वर्ष) सोमवार को रेलवे टिकट लेने के लिए लाइन में खड़ा था। इसी दौरान कुछ टिकट दलालों ने बिना लाइन में लगे टिकट लेने का प्रयास किया, जिस पर विकास ने आपत्ति जताई। इस बात को लेकर विवाद शुरू हुआ, जो देखते ही देखते मारपीट में बदल गया। घटना के दौरान स्टेशन पर तैनात आरपीएफ

जवान हरिशंकर सिंह ने तत्काल हस्तक्षेप किया और दोनों पक्षों को पकड़कर दिलदारनगर आरपीएफ चौकी भेज दिया।

हालांकि, बाद में दोनों पक्षों ने आपसी सुलह कर ली, जिसके चलते कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की गई। स्थानीय लोगों का कहना है कि स्टेशन परिसर में टिकट दलालों का आतंक बढ़ता जा रहा है। दलाल लाइन में खड़े यात्रियों को धक्का देकर टिकट काउंटर पर कब्जा जमा लेते हैं और बिना लाइन में लगे टिकट प्राप्त कर लेते हैं। यात्रियों द्वारा विरोध करने पर अक्सर मारपीट की नौबत आ जाती है। यात्रियों ने रेलवे प्रशासन और आरपीएफ से टिकट दलालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है ताकि यात्रियों को बिना किसी डर के रेलवे टिकट मिल सके और स्टेशन परिसर में शांति व्यवस्था बनी रहे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर महाशिव के मूर्ति कि हुई प्राण प्रतिष्ठा

शकुन टाइम्स संवाददाता

सकलडीहा/चंदौली। सकलडीहा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रांगण में सीएससी अधीक्षक संजय कुमार यादव की अध्यक्षता में भोलेनाथ के मंदिर का निर्माण कराया गया। जहां इस कार्य में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के समस्त चिकित्सकों द्वारा अपनी सुविधा अनुसार पूर्ण सहयोग उपलब्ध कराई गई।

वही मंदिर निर्माण के पश्चात महाशिव की मूर्ति स्थापना के साथ अन्य देवी देवताओं के मूर्ति की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया गया। जिसके क्रम में सोमवार को विद्वान पंडितो द्वारा मंत्रों उच्चारण के साथ महाशिव के शिवलिंग तथा बजरंगबली के साथ अन्य देवताओं की मूर्ति स्थापित के क्रम में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। इस कार्य में प्रात: काल से ही चिकित्सा के साथ ग्रामीण उपस्थित हुए थे जहां विधि विधान के साथ समस्त मूर्तियों की जलाभिषेक, अंग वस्त्र, जलसयन, अन्नशयन के साथ अन्य कार्य किए गए। इसके पश्चात प्रात: काल से ही विद्वानों द्वारा मंत्र उच्चारण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया। वही इस प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि तथा मुख्य अतिथि को भी आमंत्रित किया गया था। जिसमें सकलडीहा ब्लॉक से लेकर स्वास्थ्य विभाग, सुरक्षा विभाग,तहसील अधिकारी, शिक्षा विभाग तथा पत्रकारों व ग्रामीणों को आमंत्रित किया गया था। इस कार्यक्रम की मुख्य बागडोर चिकित्सा अधीक्षक संजय यादव द्वारा अपने हाथों में लिए हुए सभी उपस्थित लोगों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया जा रहा था। सफाई व्यवस्था की दृष्टिगत सफाई कर्मियों द्वारा प्रात: काल से ही संपूर्ण स्थल को साफ सुथरा करने के साथ चूने का छिड़काव तथा स्वागत का कार्य सुनिश्चित किया गया था।

डीएम की अध्यक्षता में हुई जिला पर्यावरण वृक्षारोपण समिति और जिला गंगा समिति की बैठक

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सोमवारको जिला पर्यावरण/वृक्षारोपण समिति और जिला गंगा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में जिलाधिकारी श्रीमती प्रेरणा शर्मा की अनुमति द्वारा मुख्य विकास अधिकारी द्वारा आयोजित की गई। डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा द्वारा निर्देश दिये गये कि आगामी वृक्षारोपण कार्यक्रम वर्ष 2025-26 के अंतर्गत भूमि चिन्हकांन कर सूचना प्रभागीय वनाधिकारी कार्यालय हापुड़ को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने द्वारा जिन विभागों की जियो टैगिंग 100त्न पूर्ण नहीं हुई है निर्देशित किया कि वे शीघ्र कार्य पूर्ण कर पोर्टल पर अपलोड़ करना सुनिश्चित करें। डीएम ने निर्देशित किया की ष्ट्ररूपोर्टल हेतु पौध की जीवितता की सूचना भी दिनांक 25.02.2025 तक कार्यालय प्रभागीय वनाधिकारी हापुड़ को उपलब्ध करना सुनिश्चित करें।जिला पर्यावरण समिति की बैठक मे जिलाधिकारी ने सिंगल यूज प्लास्टिक, इलेक्ट्रॉनिक, बायोमेडिकल अवशिष्ट पदार्थों के निस्तारण के लिए बेहतर रणनीति बनाकर निर्धारित नियमानुसार निस्तारित कराने के निर्देश दिए। सरकारी महोदय द्वारा निर्देशित किया गया कि बायोमेडिकल टीम का गठन कर जिले में सरकारी तथा प्राइवेट अस्पतालों में उत्सर्जित बायो मेडिकल वेस्ट का उचित निस्तारण तथा नियमानुसार प्राइवेट अस्पतालों का संचालन हो। डीएम ने अधिशासी अधिकारियों से सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये अभियान चलाकर चालान करने साथ मे नियमित कार्यवाही से अवगत कराने के निर्देश दिए। जिला गंगा समिति की बैठक में डीएम द्वारा विभागों को सख्त निर्देश दिए गए कि महाशिवरात्रि के पर्व पर गढ़मुक्तेश्वर स्थित बृजघाट में आने वाले कांवरियों/श्रद्धालुओं को कोई परेशानी ना हो इसके लिए सड़कों पर साफ सफाई और बालू मौरंग या अन्य बिल्डिंग मैटेरियल सड़कों पर न फैले रहे इससे श्रद्धालुओं को परेशानी न हों इसका विशेष धयान देने को निर्देशित किया गया ।कार्ययोजना 2025 के अन्तर्गत नालो की साफ़ सफाई पर विशेष ध्यान देते हुए निर्देशित किया की जनपद में स्थित सभी नालों की सफाई कर जिन नालो की टैपिंग नहीं हुयी है उनकी जल्द से जल्द टैपिंग पूर्ण करें। बैठक का संचालन प्रभागीय वनाधिकारी प्रमोद कुमार द्वारा किया गया। बैठक के दौरान प्रमोद कुमार प्रभागीय वनाधिकारी,देवेन्द्र प्रताप जिला विकास अधिकारी, सुनील त्यागी मुख्य चिकित्साधिकारी, अंकित वर्मा उप जिलाधिकारी, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका, भारत भूषण गर्ग पर्यावरण विद तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

यूपी मदरसा बोर्ड की परीक्षाएं शुरू, 2000 छात्र-छात्राएं शामिल हुए

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश मदरसा बोर्ड की परीक्षाएं सोमवार से शुरू हो गईं। लखनऊ में 6 परीक्षा केंद्रों पर लगभग 2000 छात्र-छात्रों ने परीक्षा दी। पूरे प्रदेश में 89 हजार छात्र परीक्षा में शामिल हो रहे हैं। मदरसा बोर्ड के रजिस्ट्रार आर.पी सिंह ने बताया कि 17 से 22 फरवरी तक ये परीक्षा चलेगी।

मौलवी (सेकेंडरी अरबी), मुंशी (सेकेंडरी फारसी) और आलिम (सीनियर सेकेंडरी अरबी,फारसी) के पेपर होंगे। परीक्षा दो पाली में हो रही है, जिसमें सुबह की पाली 8 बजे से 11 बजे तक और शाम की पाली 2 बजे से 5 बजे तक होगी। उन्होंने बताया कि परीक्षा की सुरक्षा सख्त और पारदर्शी बनाने के लिए विशेष व्यवस्था की गई है। सभी सेंटर्स की सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी की जा रही रही है। मदरसा बोर्ड के आला अधिकारी पूरे प्रदेश के केंद्रों का लखनऊ से ऑनलाइन निगरानी कर रहे हैं। प्रदेश के सभी जिला अल्पसंख्यक अधिकारी अपनी क्षेत्र में मदरसों का निरीक्षण कर रहे हैं। आरपी सिंह ने बताया कि परीक्षा को नकल से मुक्त बनाने के लिए फ्लाइंग टीम पूरी तरह से सक्रिय हैं। परीक्षा से पूर्व सभी केंद्रों का बारीकी से जायजा लिया गया था।

परीक्षा के दौरान भी केंद्रों का औचक निरीक्षण किया जा रहा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष मौलवी मुंशी और आलिम की परीक्षा समय से शुरू हो गई। उत्तर प्रदेश के 71 जनपदों में 434 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। सभी सेंटर्स की सीसीटीवी मॉनिटरिंग लगातार जारी है। प्रदेश के 150 परीक्षा केंद्रों को सीधे कंट्रोल कमांड रूम से वेब कास्टिंग के माध्यम से जोड़ा गया है। सभी जिलों में मजिस्ट्रेट विभाग के अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। उड़न दस्ता और सचल दस्ता मदरसों में पहुंचकर औचक निरीक्षण कर रहा है।

संक्षिप्त सामाचार

यूपी विधानसभा के मुख्य द्वार पर भित्तिचित्रों का अनावरण

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र से पहले सोमवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानभवन के मुख्य द्वार का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विधानसभा परिसर में विभिन्न भित्तिचित्रों का अनावरण भी किया गया। विधानसभा को हाईटेक और अधिक कलात्मक बनाने के क्रम में इस कार्य को पूरा किया गया है। नव निर्मित भित्तिचित्रों में भारत की ऐतिहासिक घटनाओं और राजनीतिक व्यवस्था को उकेरा गया है। इनमें गीता के विभिन्न प्रसंग भी दर्शाए गए हैं, जिससे विधानसभा भवन अब और भी अधिक भव्य और आकर्षक दिखने लगा है। पहले लकड़ी का गेट हुआ करता था, जिसे अब अत्याधुनिक और नक्काशीदार स्टील के मजबूत गेट से बदल दिया गया है। विधानसभा के सौंदर्यीकरण और आधुनिकीकरण के लिए लगातार कार्य किए जा रहे हैं। विधानसभा को तकनीकी रूप से उन्नत करने के साथ-साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना, नेता सदन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना, नेता विपक्ष माता प्रसाद पांडेय और कांग्रेस नेता अराधना मिश्रा मोना उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद सर्वदलीय बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष के प्रमुख नेता शामिल हुए।

जीवन में सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं-मानवेन्द्र सिंह

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह ने 3830 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान करते हुए, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कुर्सी रोड स्थित इंटीग्रल यूनिवर्सिटी का 16वां दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सभापति कुंवर मानवेंद्र सिंह ने आज हिस्सा लिया। कुंवर मानवेंद्र सिंह ने विश्वविद्यालय से स्नातक, परास्नातक एवं पीएचडी करने वाले 3830 विद्यार्थियों को उपाधि देकर उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर उन्होंने छात्रों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जीवन में सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरी मेहनत के साथ जूझना पड़ता है। मेहनत करें और आगे बढ़ें। छात्र देश का भविष्य हैं, ये आगे बढ़ेंगे तो राष्ट्र की प्रगति होगी।

रक्षा लेखा विभाग का 11वां अखिल भारतीय डीएडी बैडमिंटन टूर्नामेंट आल से

लखनऊ। रक्षा लेखा खेल नियंत्रण बोर्ड (डीएएससीबी) के तत्वावधान में रक्षा लेखा विभाग के 11वां अखिल भारतीय डीएडी बैडमिंटन टूर्नामेंट (पुरुष और महिला) 18 फरवरी 2025 से 21 फरवरी 2025 तक लखनऊ छावनी स्थित सूर्या खेल परिसर (एसकेपी) में आयोजित किया जाएगा। इस टूर्नामेंट का उद्घाटन देविका रघुवंशी, आईडीएएस, रक्षा लेखा महानियंत्रक (सीजीडीए) और अध्यक्ष डीएएससीबी द्वारा किया जाएगा। यह टूर्नामेंट नॉकआउट आधार पर पांच श्रेणियों-पुरुष और महिला (एकल), पुरुष और महिला (युगल) और मिश्रित डबल में आयोजित किया जाएगा। टूर्नामेंट में पूरे भारत के 31 नियंत्रक कार्यालय से कुल लगभग 192 प्रतिभागी (पुरुष,महिला) भाग लेंगे। टूर्नामेंट में 131 पुरुष और 61 महिलाएं भाग लेंगी।

मिल्कीपुर चुनावः सपा सांसद अवधेश प्रसाद जायेंगे कोर्ट, हार को देंगे चुनौती

बीजेपी की बढ़ सकती है टेंशन

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मिल्कीपुर उपचुनाव में हार के बाद समाजवादी पार्टी ने चुनाव आयोग पर कई तरह के सवाल उठाए हैं। फैजाबाद से सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने चुनाव में गड़बड़ी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हम चुनाव को निरस्त कराने की मांग को लेकर कोर्ट जाएंगे। सपा सांसद ने कहा कि हमारे नेता अखिलेश यादव ने हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के बड़े वकीलों से राय ली है। मामला बहुत गंभीर है यहां तक कि जो वरिष्ठ वकील आए थे उन्होंने जब सारी धमकियां सुनी तो कहा कि ये गंभीर मामला है ।चुनाव तो रद्द हो जाएगा और जो-जो अधिकारी है, जिन्होंने बटन को अपनी उंगली से दबाया है उन पर केस भी चलेगा और उन्हें जेल जाने से अब दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक पाएगी। अवधेश प्रसाद ने कहा कि प्रदेश ही नहीं देश के तमाम सांसदों को जानकारी है कि इस चुनाव को लूटा गया है। चुनाव पुलिस अधिकारियों, एसडीएम और अधिकारियों ने लूटा था जिन्हें कम से कम दो सौ वोट डालने का कोटा दिया गया है,जिसका सबूत हमें मिल गया है, जिसमें कहा गया है कि बाबा की इज्जत का सवाल है,उन्होंने कहा कि बाबा की इज्जत नहीं जाने दी जाएगी। सारे सबूत हमारे पास हैं।

मिल्कीपुर चुनाव में हार को लेकर सपा सांसद ने कहा कि चुनाव नहीं हारे हैं। चुनाव पर डाका डाला गया है। डकैत कोई दूसरे लोग नहीं थे, डकैती डालने वाले सरकारी लोग थे। मैं कहना चाहता हूं कि सरकार आती-जाती रहती है,जब हमारी सरकार आएगी तो एक-एक को जेल भिजवाएंगे ये याद रखे। इससे पहले सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव चुनाव आयोग के कामकाज और सरकारी अधिकारियों द्वारा चुनाव में गड़बड़ी के आरोप लगा चुके हैं।

गंदा पानी आने पर भड़के लोग, नगर निगम मुख्यालय पर नारेबाजी

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के नई बस्ती इलाके में गंदा पानी आने की शिकायत लोगों ने नगर निगम के अधिकारियों से की है। लोगों का आरोप है सीवर का गंदा पानी दुर्गंध के साथ घरों में आ रहा है। आरोप है जल निगम और नगर निगम के अधिकारी कई बार मौके पर आए थे, लेकिन अभी तक कोई सुनवाई नहीं हुई है। नगर निगम के अधिकारी सिर्फ आश्वासन दे रहे। सोमवार को नई बस्ती हरी मजार के पास गंदा पानी आने पर नाराज लोग इकट्ठा हो गए। मौके पर लोगों ने नारेबाजी की है। पुलिस ने मौके पर पहुंचने के बाद लोगों को शांत किया। स्थानीय निवासी दानिश इकबाल फरीदी ने बताया कि सीवर का पानी घरों में आ रहा है। इससे नहाने की हिम्मत नहीं होती है। पानी खरीदकर जरूरी काम कर रहे हैं। पार्षद अमित चौधरी ने बताया कि क्षेत्र के 20 हजार लोग प्रभावित हैं। गंदे पानी की समस्या कई सालों से बनी हुई है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता के आह्वान पर हज़ारों कार्यकर्ता व पदाधिकारी मुज़फ्फरनगर के लिए रवाना हुए

जनपद हापुड़ से हज़ारों कार्यकर्ता बसों से सवार होकर निकले महापंचायत में हिस्सा लेने के लिए

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सोमवार को मुजफ्फरनगर के काकड़ा में आयोजित महा पंचायत के लिए भाकियू टिकैत संगठन के हज़ारों कार्यकर्ता और पदाधिकारी जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में नारे बाजी करते हुए रवाना हुए।भारतीय किसान यूनियन टिकैत के जिला अध्यक्ष दिनेश खेड़ा ने जानकारी देते हुए बताया है कि।

राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत के आह्वान पर इस बार किसानों की राजधानी सिसौली में होने वाली मासिक पंचायत को स्थगित कर वहां की बजाए काकड़ा में महा पंचायत के रूप में आयोजित कि जा रही है। काकड़ा में होने वाली महापंचायत में जनपद हापुड़ से जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में जिला प्रवक्ता कुँवर खुशनुद, महिला विंग जिला अध्यक्ष नीलम त्यागी, सरिता देवी, ममता शर्मा, शोभा देवी, गढ़ तहसील अध्यक्ष श्याम सुंदर त्यागी, गढ़ ब्लॉक अध्यक्ष माजिद चौधरी, सिंभावली ब्लॉक अध्यक्ष मुनव्वर अली, हापुड़ ब्लॉक अध्यक्ष पंडित विनोद शर्मा, तहसील हापुड़ अध्यक्ष चौधरी ओमबीर सिंह, धौलाना ब्लॉक अध्यक्ष उमेश राणा, तहसील अध्यक्ष रविन्द्र सिंह, महिपाल सिंह उर्फ गुजराल, नफीस खां, मोहसीन अल्वी, परवेज अली, राजा खेड़ा, डॉक्टर मतलूब, आजाद तोमर, जगबीर चौहान, फैज़ान अल्वी समेत के नेतृत्व में भाकियू टिकैत के हज़ारों कार्यकर्ता और पदाधिकारी बसों में सवार होकर रवाना हो गए।

चकबंदी न्यायालयो में 3 वर्षों से अधिक पुराने वादों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किए जाने हेतु प्रभावी पैरवी करने के दिए निर्देशः डीएम

डीएम की अध्यक्षता में हुई चकबंदी विभाग की समीक्षा

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा की अध्यक्षता में चकबंदी विभाग की बैठक आयोजित की गई। बैठक में चकबन्दी विभाग में कार्यरत बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी / चकबन्दी अधिकारी / सहायक चकबन्दी अधिकारीगण उपस्थित रहे है। जनपद हापुड में कुल 24 ग्राम चकबन्दी प्रक्रियाधीन है, जिसमें से जनपद हापुड में 16 ग्राम तहसील-गढ़मुक्तेश्वर के नवप्रसारित तथा इसके अतिरिक्त 01 ग्राम पूर्व से चकबन्दी प्रक्रियाओं में प्रचलित है तथा तहसील हापुड के 05 ग्राम तथा 01 ग्राम नवप्रसारित हैं तथा तहसील-धौलाना का 01 ग्राम चकबन्दी प्रक्रियाओं में प्रचलित है उक्त ग्रामों में जिलाधिकारी / जिला उप संचालक चकबन्दी हापुड द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 की चकबन्दी निदेशालय स्तर से जारी कार्य योजना के अनुरूप कार्य प्रगति बढाने तथा चकबन्दी न्यायालयों में 03 वर्षों से अधिक पुराने वादों वादों को प्राथमिकता के

आधार पर निस्तारित किये जाने हेतु व शासन ,चकबन्दी निदेशालय / जिला स्तर पर प्राप्त परिवाद/आई0जी0आर0एस0 के गुणवत्ता पूर्ण ससमय निस्तारण के निर्देश भी दिये गये है। बैठक के अंत में डीएम ने चकबंदी अधिकारी को निर्देश दिए गए कि चकबंदी को लेकर जो भी समस्या मेरे द्वारा मार्क करके आपको प्रेषित की जाती है आगामी बैठक से पूर्व उसमें क्या कार्रवाई की गई उसकी जानकारी भी फोटो सहित उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

जनपद में चल रहे 50 लाख से अधिक एवं 50 लाख से कम लागत के निर्माण कार्यों की डीएम ने अधिकारियों के साथ की बैठक

आगामी महाशिवरात्रि पर्व पर आने वाले कावड़ियों को मार्गों पर ना हो कोई परेशानी, इसका रखें विशेष ध्यान- डीएम

सीएम डैशबोर्ड की बैठक करते हुए डीएम व मुख्य विकास अधिकारी ने अधिकारियों को एक फैमिली एक आईडी बनाने के दिए निर्देश

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सोमवार को डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा एवं मुख्य विकास अधिकारी हिमांशु गौतम की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जनपद में हो रहे 50 लाख से अधिक व 50 लाख से कम लागत के निर्माण कार्यों की जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने निर्माण कार्य में चल रही धीमी प्रगति को लेकर संबंधित विभागों के अधिकारियों को दिए निर्देश। जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी ने बताया की 50 लाख से अधिक की कुल 57 परियोजना है। राजकीय महिला महाविद्यालय धौलाना, गौ संरक्षण केंद्र धौलाना, गढ़मुक्तेश्वर मे वृजघाट का निर्माण,आई टी आई बडौदा की समीक्षा के दौरान आईटीआई बडौदा को समय से पूरा कर संबंधित को जल्द से जल्द हस्तांतरित करने के निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने बैठक में उपस्थित सभी जनपदीय अधिकारियों को निर्देश दिए की जनपद में जो भी निर्माण कार्य चल रहे हैं संबंधित विभागाध्यक्ष कार्यदाई संस्था से समन्वय बनाकर उसको समय सीमा के अंतर्गत पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। किसी भी अधिकारी को किसी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न हो रही है तो हमें अवगत कराया जाए।

इसके उपरांत डीएम ने 50 लाख से कम धनराशि वाली 21 परियोजनाओं मे बाल विकास परियोजना कार्यालय गढ़मुक्तेस्वर, प्रोजेक्ट अलंकार के तहत राजकीय इंटर कालेज तथा अन्य योजनाओं की समीक्षा की। जिला अधिकारी ने जनपद के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की सभी अधिकारीगण मानक एवं गुणवत्ता सहित लक्ष्य को समय से पूरा करने के लिए प्रभावी रणनीति बनाकर अम्ल में लाएं। उन्होंने कहा कि कार्य गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की कमी न होने पाए इसके अलावा संबंधित कार्यदाई संस्था तथा संबंधित विभाग आपस में समन्वय बनाकर निर्माण कार्यों को पूर्ण कराए ।बैठक के अंत में सीएम डैश बोर्ड की समीक्षा मे विभाग की प्रगति खराब होने पर नाराजगी जाहिर की। उन्होने प्रोजेक्ट वाइज समीक्षा के दौरान जिन विभागो की रैंक सी0 डी0 ई0 की श्रेणी में है उनको विशेष निर्देश दिए की सीएम डैशबोर्ड पोर्टल पर फिडिंग का कार्य सही प्रकार से किया जाए जिससे जनपद की रैंक प्रभावित न हो। आगामी समीक्षा बैठक से पूर्व जिन विभागों की खराब रैंक प्राप्त हुई है उसमें सुधार किया जाए। जिलाधिकारी ने समस्त उप जिलाधिकारी, खंड विकास अधिकारी को निर्देश दिए कि फैमिली आईडी में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का डाटा फीड करना सुनिश्चित करें बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए की आगामी महाशिवरात्रि पर्व को दृष्टिगत रखते हुए कार्य योजना समय से पूर्व बना ले जिससे महाशिवरात्रि के दौरान आने वाले कांवड़ियों को कावड़ मार्ग में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो द्य उन्होंने निर्देश दिए कि जिन विभागों के निर्माण कावड़ मार्ग पर चल रहे हैं वह अधिकारी निर्माण आधीन स्थल के समीप एक अन्य मार्ग अस्थाई रूप से बनवा लें जिससे कावड़ यात्रियों को आवागमन में कोई परेशानी न हो द्य जिलाधिकारी ने समस्त अधिशासी अधिकारियों को निर्देशित किया कि समय अंतर्गत कावड़ मार्ग एवं स्थलों पर सफाई कराना सुनिश्चित करें बैठक में जिला विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला सिंचाई सहित अन्य संबंधी अधिकारी उपस्थित रहे।

एसटीएफ ने 55 लाख की चरस पकड़ी, बिहार से बड़ोदरा जा रहा था तस्कर

लखनऊ। यूपी एसटीएफने 11 किलो चरस के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। जिसकी कीमत मार्केट में करीब 55 लाख रुपए बताई जा रही है। बिहार के सिवान दुमका निवासी तस्कर राजेश कुमार ट्रेन में कपड़ों में छिपाकर तस्करी कर रहा था। तस्कर राजेश ट्रेन से डिमांड के हिसाब से ग्राहकों को सप्लाई करता था। वह छपरा से बड़ोदरा जा रहा था। लखनऊ चारबाग स्टेशन पर बोगी से मुखबिर की सूचना पर पकड़ा गया। एसटीएफके मुताबिक मुखबिर की सूचना पर राजेश को मुजफ्फरपुर-सूरत एक्सप्रेस के कोच नंबर बी-6 से पकड़ा गया। वह सीट नंबर-30 पर बैठकर जा रहा था। राजेश ने पूछताछ में बताया कि वह काफी दिनों से चरस की सप्लाई करता है। उसको यह चरस उसके गांव के बगल में रहने वाला महमूद छपरा रेलवे स्टेशन पर देता था। जिसे कपड़ा रखने वाली ट्रॉली बैग में छिपाकर मांग के हिसाब से पहुंचाता था।

22 फरवरी को पूर्व सैनिकों की रैली, समस्याओं का होगा समाधान

शकुन टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के सूर्या कमान में 22 फरवरी को पूर्व सैनिक रैली का आयोजन किया जाएगा। यह रैली एएमसी सेंटर और कॉलेज स्टेडियम में होगी। इस आयोजन में पूर्व सैनिकों को सेना के बड़े अधिकारियों से सीधे संवाद करने और अपनी समस्याएं रखने का मौका मिलेगा। मध्य कमान के प्रवक्ता शांतनु सिंह ने बताया कि यह कार्यक्रम सुबह 9 बजे से शुरू होगा। पूर्व सैनिक रैली स्थल पर पहुंचकर अपनी समस्याओं को अधिकारियों और संबंधित इकाइयों के सामने रख सकते हैं। पेंशन, बकाया राशि और विकलांगता लाभ से जुड़े मामलों का निपटारा किया जाएगा। पूर्व सैनिकों को रोजगार के अवसर, उद्यमिता सहायता और कौशल विकास से जुड़ी जानकारी दी जाएगी। चिकित्सा सेवाओं और ईसीएचएस कार्ड से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जाएगा। शिकायतों के निवारण के लिए विशेष मंच की व्यवस्था होगी। यह रैली पूर्व सैनिकों के लिए अपनी समस्याओं को हल कराने और सेना के अधिकारियों से सीधे संवाद करने का बेहतरीन अवसर है। सूर्या कमान ने सभी पूर्व सैनिकों से इस आयोजन में शामिल होने की अपील की है ।पूर्व सैनिकों की समस्याओं का समाधान और संवाद का यह मंच, सेना और सैनिकों के बीच मजबूत रिश्ता बनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

टीबी मुक्त पंचायत की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक संपन्न

51 ग्राम पंचायतों ने ठोका दावा

शकुन टाइम्स संवाददाता

हापुड़। सोमवार को डीएम श्रीमती प्रेरणा शर्मा के कुशल नेतृत्व में एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील कुमार त्यागी जी की अध्यक्षता में जिला स्तरीय टी0 बी0 मुक्त पंचायत की जिला स्तरीय कमेटी का आयोजन मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में किया गया जिला स्तरीय कमेटी में जिला पंचायत राज अधिकारी शिव बिहारी शुक्ला जी व सभी सहायक विकास अधिकारी(पंचायत)एवं इंडियन मेडिकल एसोसिएशन हापुड़ के पदाधिकारियों एवम् स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सा अधिकारियों ने प्रतिभा किया मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सुनील कुमार त्यागी जी ने बताया कि इस वर्ष जनपद हापुड़ की 51 ग्राम पंचायत ने टीवी मुक्त के लिए दावा किया है इन सभी ग्राम पंचायतों ने शासन द्वारा जारी गाइडलाइन के सभी बिंदुओं को सत प्रतिशत पूरा किया है इन सभी ग्राम पंचायत में प्रति 1000 की आबादी पर 30 जांच पूरी हो चुकी है एवं इन ग्राम पंचायत में 1000 की आबादी पर एक मरीज या उससे कम टीवी मरीज पाए गए हैं। जो भी मरीज मिले हैं उनका उपचार आरंभ कर दिया गया है एवं भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली निश्चय पोषण योजना का लाभ इन सभी मरीजों को दिया जा चुका है साथ ही इन सभी मरीजों को स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा निश्चय पोषण पोटली का भी वितरण किया जा चुका है द्य इन 51 ग्राम पंचायत में से 2 ग्राम पंचायत का चयन सिल्वर पदक के लिए किया गया है। इन दोनों ग्राम पंचायत को गत वर्ष कांस्य पदक दिया जा चुका है द्य बाकी 49 ग्राम पंचायतों को कांस्य पदक के लिए नामित किया गया है द्य इन सभी ग्राम पंचायतों के डॉक्यूमेंट का वेरिफिकेशन ब्लॉक स्तरीय कमेटी द्वारा करके जिला प्रशासन को अग्रसारित कर दिया गया जिला छह रोग अधिकारी डॉ राजेश सिंह ने बताया की जिला प्रशासन द्वारा यह रिपोर्ट राज्य स्तरीय कमेटी को भेजी जाएगी द्य उसके बाद राज्य स्तरीय कमेटी द्वारा यह रिपोर्ट सेंट्रल टीवी डिविजन दिल्ली को भेजी जाएगी सेंट्रल टीवी डिवीजन द्वारा अंतिम रूप से निर्णय लिया जाएगा। जिला पी0 पी0 एम0 समन्वयक सुशील चौधरी ने बताया कि इन पंचायतों को सभी डाक्यूमेंट्स के सत्यापन के बाद सेंट्रल टीवी डिविजन नामित करेगी उन सभी ग्राम पंचायत को 24 मार्च 2025 को विश्व क्षय रोग दिवस के अवसर पर पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

सम्पादकीय

हादसों का महाकुम्भ

प्रयागराज में चल रहा महाकुम्भ जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा है, उस सिलसिले में हादसों पर हादसे हो रहे हैं। मेला क्षेत्र में होने वाली भगदड़ और आगजनी की कई घटनाओं के अलावा देश भर से प्रयागराज या इस दिशा में आने वाली ट्रेनों में जो दृश्य दिखलाई दे रहे हैं वे अपने आप में दुखद हैं। इस श्रृंखला में ताजा हादसा नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म क्रमांक 14 व 15 पर शनिवार की रात को करीब 10 बजे हुआ। प्रयागराज जाने वाली ट्रेनें पकड़ने के लिये इतनी बड़ी तादाद में लोग पहुंच गये कि तिल भर भी जगह नहीं रह गयी। पीछे से आने वाले जनसैलाब ने न केवल इन दो प्लेटफॉर्मों को भर दिया वरन सीढ़ियां और फुटओवर ब्रिजों पर भी ऐसी जबर्दस्त भीड़ हो गयी कि लोगों को सांस लेना भी दूभर हो गया। हर बढ़ते जत्थे से स्थिति गम्भीर होती चली गयी। बड़ी संख्या में लोगों के बेहोश होने और दम घुटने अथवा दबने से वैसी ही मौतें होने लगीं जैसी कि प्रयागराज के मेला क्षेत्र में 28 व 29 जनवरी की दरमियानी रात को हुई थी। उसमें मृतकों के सरकारी आंकड़े तो 30 के हैं लेकिन वास्तविक संख्या कई गुना अधिक होने का अंदेशा है। वैसे ही दिल्ली के इस हादसे में रेलवे प्रशासन व सरकार के अनुसार 19 लोगों की मृत्यु बतलाई जाती है लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि यह आंकड़ा और भी ज्यादा हो सकता है। इनमें बच्चे और महिलाएं भी हैं। इस बार के महाकुंभ के लिए इस बात का खूब प्रचार किया गया है कि यह 144 वर्षों के बाद दुर्लभ योग में आया है, इसलिए अमृत स्नान के लिये मानो पूरा भारत उत्कंठित है। देश भर से विभिन्न परिवहन के साधनों से करोड़ों की संख्या में लोग यहां अकल्पनीय परेशानियां झेलते हुए पहुंच रहे हैं। स्नान की सभी महत्वपूर्ण तिथियों में लोगों का आना जारी है। ट्रेनों के डिब्बे खचाखच भरे हैं और उनमें एक-एक इंच के लिये संघर्ष हो रहा है। पाप धोने, पुण्य कमाने तथा मोक्ष पाने के आकांक्षी रेल डिब्बों की खिड़कियों में लगे कांच को तोड़कर उनमें घुस रहे हैं। लोगों को कुम्भ में आने के लिये आकर्षित करने के उद्देश्य से सरकार ने प्रयागराज से लौटने वाली ट्रेनों में सामान्य श्रेणियों की यात्रा मुफ्त कर रखी है लेकिन श्रद्धालु एक कदम आगे बढ़ते हुए न केवल आने वाली ट्रेनों से ही बगैर टिकट व आरक्षण के आ रहे हैं वरन आरक्षित व एसी डिब्बों में भी बेरोकटोक घुसकर दूसरों की सीटों पर कब्जा कर रहे हैं। अंदर के यात्री यदि भीड़ को घुसने से रोकने के लिये चिटकनी लगा रहे हैं तो बाहर प्लेटफॉर्मों के सैलाब उसे खुलवाने का प्रबन्ध कर पहुंच रहे हैं। भीतर किसी के घायल होने की परवाह किये बगैर बांस-बल्लियों से कांच तोड़े जा रहे हैं और डिब्बों में लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं।

स्टेशनों पर तैनात रेलवे कर्मचारी व पुलिस बल अपर्याप्त साबित हो रहा है। नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी भीड़ इतनी ज्यादा थी कि उसे नियंत्रित करना ही असम्भव हो गया था। सड़क मार्ग से आने वालों की अपनी दिक्कतें हैं। प्रयागराज से आने वाले सारे मार्ग लगभग जाम रहते हैं। मौनी अमावस्या के दौरान तो कम से कम 3 सौ किलोमीटर जाम देखा गया जिससे निजात पाने के लिये लोगों को वाहनों के भीतर दो से तीन दिन तक गुजारने पड़े। खाने-पीने का सामान खत्म या कई-कई गुना महंगा हो गया। प्रयागराज पहुंचने वाले रास्तों पर पड़ने वाले गांव एवं कस्बे भी भीड़ के कारण परेशानियां झेल रहे हैं। तमाम व्यवस्थाएं ठप हैं और प्रशासन लाचार। लोगों को उनके हाल पर छोड़ा जा रहा है। उनकी मदद न तो सरकार कर पा रही है, न राजनीतिक दल और न ही वे धार्मिक संस्थाएं, धर्मगुरु, अखाड़े एवं सम्प्रदाय जो हिन्दुओं का नेतृत्व करने का दावा करते हैं। लोग बेमौत मारे जा रहे हैं। अलबत्ता, इस महाकुम्भ का सियासी लाभ लेने में भारतीय जनता पार्टी सबसे आगे है। मेला क्षेत्र में हुए हादसे के अगले दिन श्रद्धालुओं पर हेलीकॉप्टर से की गयी पुष्प वर्षा बतलाती है कि न तो केन्द्र सरकार की मरने वालों के प्रति संवेदना है और न ही राज्य सरकार की। उत्तर प्रदेश सरकार ने उस हादसे की जांच के आदेश दे दिये हैं जिसमें अंततः कौन सा एंगल सामने आता है, देखना होगा। ऐसे हादसे दोबारा न हों उसके पुख्ता इंतजाम करने की बजाये उप्र सरकार ने 21 सोशल मीडिया यूजर्स के खिलाफभगदड़ सम्बन्धी भ्रामक वीडियो डालने के मामले जरूर दर्ज किये हैं जो बतलाता है कि मुकम्मल व्यवस्था बनाये रखने में नाकाबिल सरकार आवाज दबाने के ऐसे उपाय करने में जुट गयी है। इसी तरह से नयी दिल्ली तथा रेलवे प्रशासन ने दिल्ली दुर्घटना की जांच शुरू कर दी है। अब वहां भीड़ को नियंत्रित करने के लिये पुलिस की 6 अतिरिक्त कम्पनियां तैनात कर दी गयी हैं। उधर घायलों को एलएनजीपी अस्पताल में भर्ती किया गया है जिसके बाहर सशस्त्र बल लगाये गये हैं। कहते हैं कि मृतकों व घायलों की संख्या को सरकार छिपाना चाहती है इसलिये मीडिया को अंदर जाने की अनुमति नहीं है। परिजन भी भीतर जाने के लिये तरस रहे हैं। इस हादसे ने साबित कर दिया है कि उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का यह दावा खोखला साबित हुआ जिसमें उन्होंने कहा था कि इस महाकुम्भ में 40 करोड़ लोगों के आने के अनुमान हैं लेकिन सरकार ने 100 करोड़ लोगों के आने की तैयारी कर रखी है। बताया जाता है कि मौनी अमावस्या पर राज्य सरकार को 10 करोड़ से ज्यादा लोगों के आने का अंदाजा था। हालांकि 8-9 करोड़ लोगों के आने पर ही व्यवस्था ढह गयी। यदि सचमुच अनुमानित संख्या में लोग आते तो क्या स्थिति बनती- इसका भी अनुमान लगाया जा सकता है। दिल्ली का हादसा बताता है कि रेलवे ने भी पर्याप्त तैयारियां एवं व्यवस्था नहीं कर रखी हैं। ऐसे में लोगों को आमंत्रण देना उनकी जान से खिलवाड़ करना है।

कांग्रेस में फेरबदल: क्या पार्टी को नुकसान पहुंचाने वालों को हटाया जाएगा

शकील अख्तर

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के पुनर्गठन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। लंबे समय बाद यह काम हो रहा है इसलिए उम्मीद थी कि एक बार में पूरी तरह होगा। लेकिन शायद इसके लिए बहुत मजबूत इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। राहुल गांधी के पास है मगर वह प्रधानमंत्री मोदी भाजपा संघ के सामने। अपनी पार्टी में वह मजबूत नेता की तरह आते नहीं दिख रहे। और अब जब सब कुछ उनके हाथ में है तब भी अगर वे पार्टी में मजबूत नेता के तौर पर काम नहीं करते तो कांग्रेस को मान लेना चाहिए कि राहुल इन्दिरा गांधी या आज की बात करें तो प्रतिद्वन्दी मोदी की तरह, अपनी पार्टी चलाने के इच्छुक नहीं हैं, अब पार्टी को ही उन्हें उनकी तरह चलाना होगा। उनकी तरह चलाने से क्या मतलब है? पहले यह स्पष्ट कर दें! राहुल व्यक्तिगत रूप से हजारों किलोमीटर जैसी मुश्किल दो-दो यात्राएं, बेशुमार लोगों से मिलना, विभिन्न कामकाजी वर्गों के पास जाना उनके काम और जिन्दगी के बारे में समझना, पिता राजीव गांधी की तरह नई टेक्नालॉजी एआई, ड्रोन से भारत के भविष्य बनाने की बात करना, किसी खतरे से नहीं घबराना जैसे वाले आदमी हैं। नेताओं का वह मिजाज उनका नहीं है कि सब कुछ खुद करना है। अपने कंट्रोल में रखना है। नहीं है तो नहीं है! हालांकि आज इस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत है। भाजपा में तो मोदी ही मोदी हैं। उनके अलावा और कोई कुछ नहीं है। ऐसे ही बाकी पार्टियों में भी। टीएमसी में ममता बनर्जी हैं। सपा में अखिलेश यादव। राजद में लालूप्रसाद यादव। सब जगह एक व्यक्ति जो उसका सबसे बड़ा नेता है वही सर्वेसर्वा है।

> जदयू में अब नीतीश कुमार का कंट्रोल नहीं रहा तो नीचे गिरते हुए दिखने लगी। बाकी एक नेता की जिन पार्टियों का जिक्र किया वे अपने-अपने में मजबूत हैं। तो आज की देश की परिस्थितियां ऐसी हैं कि वहां पार्टी के आन्तरिक लोकतंत्र के सवाल का कोई मतलब नहीं है। मुख्य बात है आपकी पार्टी कितना मजबूत हो रही है। राहुल गांधी पार्टी में लोकतंत्र की स्थापना करते रहें लेकिन जब देश में ही वह कमजोर किया जा रहा है जिसे खुद राहुल कहते हैं तो वह किसी पार्टी में कितना रहेगा। मतलब पार्टी रहेगी तो आन्तरिक लोकतंत्र और दूसरे सिद्धांत रहेंगे। पहली बात पार्टी को मजबूत करना है। तो इन परिस्थितियों में कांग्रेस को यह सोचना होगा कि वह राहुल का बेहतर इस्तेमाल कैसे कर सकती है। संगठन जैसे काम अगर उनकी रूचि का विषय नहीं है तो उसमें उनकी राय ली जाए मगर भूमिका सीमित रखी जाए। कहना आसान है।

जदयू में अब नीतीश कुमार का कंट्रोल नहीं रहा तो नीचे गिरते हुए दिखने लगी। बाकी एक नेता की जिन पार्टियों का जिक्र किया वे अपने-अपने में मजबूत हैं। तो आज की देश की परिस्थितियां ऐसी हैं कि वहां पार्टी के आन्तरिक लोकतंत्र के सवाल का कोई मतलब नहीं है। मुख्य बात है आपकी पार्टी कितना मजबूत हो रही है। राहुल गांधी पार्टी में लोकतंत्र की स्थापना करते रहें लेकिन जब देश में ही वह कमजोर किया जा रहा है जिसे खुद राहुल कहते हैं तो वह किसी पार्टी में कितना रहेगा। मतलब पार्टी रहेगी तो आन्तरिक लोकतंत्र और दूसरे सिद्धांत रहेंगे। पहली बात पार्टी को मजबूत करना है। तो इन परिस्थितियों में कांग्रेस को यह सोचना होगा कि वह राहुल का बेहतर इस्तेमाल कैसे कर सकती है। संगठन जैसे काम अगर उनकी रूचि का विषय नहीं है तो उसमें उनकी राय ली जाए मगर भूमिका सीमित रखी जाए। कहना आसान है। मगर करना बहुत टिपिकल। वैसे राहुल अहंवादी व्यक्ति नहीं हैं। टीम के हिसाब से खेल सकते हैं। मगर कोई खिलाने वाला होना चाहिए। जो कांग्रेस में चाणक्य की बात की जाती है वह इसीलिए। मगर आजकल चाणक्य कहां मिलते हैं। मैनेजर होते हैं। और मैनेजर अपना फायदा देखते हैं। कांग्रेस के सबसे पुराने और बड़े मैनेजर गुलामनबी आजाद रहे। तमाम राज्यों के प्रभारी रहे। काम हाईकमान का नाम लेकर करते थे मगर प्रचार यह कि उनकी राजनीतिक क्षमता है। आज मालूम पड़ गई राजनीतिक क्षमता! पार्टी में एक आदमी नहीं बचा। खुद ही झोला झंडा सब उठाना पड़ रहा है। ऐसे ही बीजेपी में एक हुए थे-प्रमोद महाजन। वाजपेयी जैसे जमीनी नेता को भरोसा दिला दिया कि इंडिया इज शाइनिंग! और जल्दी चुनाव करवाकर हरवा दिया। वाजपेयी जी ने जिन्दगी भर विपक्ष की राजनीति की। पुरानी अम्बेसडर में देश भर की सड़कों की खाक छानी। मगर मैनेजर के चक्कर में वे भी आ गए और छह महीने पहले चुनाव करवा दिए। प्रधानमंत्री मोदी की सफलता का एक बड़ा कारण यह है कि कोई मैनेजर नुमा नेता उनके आसपास नहीं है। वाजपेयी जैसे दूसरे जमीन से जुड़े नेता मुलायम सिंह यादव भी अमर सिंह जैसे मैनेजर के कारण 2007 का चुनाव हारे थे। पहली बार मायावती पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई थीं। उसके बाद अखिलेश यादव ने जब अमर सिंह का ठीक से इलाज किया तब वे 2012 में सपा को फिर सत्ता में ला पाए थे। इसलिए राजनीति में मैनेजरों से बचने की बहुत जरूरत है। चाणक्य होना चाहिए। लेकिन असली जो अपने हितों को नहीं देखे पार्टी और नेता को आगे बढ़ाने की सोचे। अर्जुन सिंह जैसा। सोनिया गांधी को कांग्रेस में सक्रिय करने और 1998 में अध्यक्ष बनाने से लेकर 2004 की केन्द्र की सत्ता में वापसी तक अर्जुन सिंह की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन बाद में खुद उनको ही अलग थलग कर दिया गया। लेकिन वे आखिरी तक पार्टी और परिवार के प्रति अपनी वफादारी बनाए रखते हुए ही इस दुनिया से गए। टीवी की दर्जनों ओबी वेन उनके घर के सामने महीनों खड़ी रहीं कि वे राजीव गांधी के खिलाफकुछ बोल दें मगर वे एक शब्द नहीं बोले। तो राहुल के लिए और उनसे ज्यादा पार्टी के लिए यह समय थोड़ा भूमिकाओं को पुनर्निधारित करने का है। मल्लिकार्जुन खरगे एक अध्यक्ष के तौर पर बहुत सही काम कर रहे हैं। खासतौर से समन्वय का। सबकी सुन रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष और पार्टी अध्यक्ष दो ही सबसे बड़े पद हैं। लोग दोनों जगह जाकर स्थिति भांपने की कोशिश करते हैं। कांग्रेसी तो इस काम के लिए प्रसिद्ध हैं। अभी जैसे ऊपर बताया अर्जुन सिंह जैसे सोनिया और परिवार के वफादार को आरोपित कर दिया गया था। राहुल के बारे में उनके विचारों को चापलूसी तक कह दिया। और वह भी बाकायदा प्रेस कान्फ्रेंस करके प्रेस नोट निकालकर। 2007 में राहुल के महासचिव बनने के बाद कौन नहीं चाहता था कि वे और बड़ी भूमिका में आएं। लेकिन अर्जुन सिंह को इस के लिए चापलूस बना दिया। कांग्रेसियों ने ही। लेकिन अभी खरगे और परिवार के बीच नाइत्तफाकी पैदा करने का कलाकारों को कोई मौका नहीं मिल रहा है। खरगे की राहुल के साथ ट्यूनिंग बहुत अच्छी है। लेकिन पार्टी के लिए कुछ और चीजें होना भी जरूरी हैं। खासतौर से संगठन के लिए। और इनमें सबसे जरूरी है नेताओं पर पार्टी का डर। वह सिरे से गायब है। प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका जाने से पहले नेहरू और राहुल पर खूब बरसे। लेकिन कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर मोदी की अमेरिकी यात्रा की प्रशंसा कर रहे हैं। गुटबाजी तो हर राज्य में है। उसकी वजह से कांग्रेस राजस्थान, हरियाणा जैसे जीते हुए प्रदेशों में विधानसभा चुनाव भी हार रही है मगर इसके दोषी नेताओं पर अभी तक तो कोई गाज गिरी नहीं। आगे देखते हैं अभी फेरबदल का काम काफी बाकी है तो पार्टी में यह सख्ती का काम कौन करेगा। यह कहने से काम नहीं चलेगा कि आन्तरिक लोकतंत्र है। याद रखना चाहिए कि इसी अनियंत्रित आन्तरिक लोकतंत्र जो बिल्कुल गैर जिम्मेदारी में बदल गया था, ने पार्टी को 2014 का लोकसभा चुनाव ऐसा हरवाया कि अभी तक वापसी नहीं हो पाई है। तो जो हमने शुरू में कहा कि यह पार्टी को समझना पड़ेगा कि अनुशासन का डंडा हाथ में लेने का काम राहुल नहीं कर सकते। लेकिन अगर शायद कोई दूसरा चलाए तो राहुल चुप रह सकते हैं। कांग्रेस को वही दूसरा, पार्टी को नुकसान पहुंचाने वालों को सही करने वाला, ढूंढना होगा।

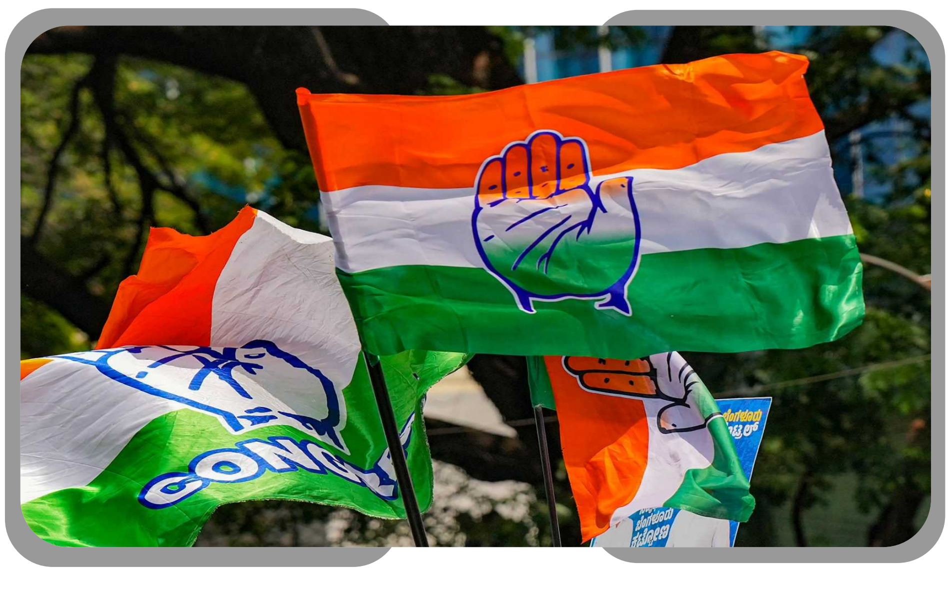

अश्लीलता-अभद्रता की हद

हाल के दिनों में सोशल मीडिया से जुड़े प्लेटफॉर्मों के कार्यक्रमों में स्वेच्छाचारिता और वर्जनाएं तोड़ने के अनगिनत मामले प्रकाश में आए हैं। जो भारतीय सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों का अतिक्रमण करते हुए अराजक व्यवहार कर रहे हैं। पिछले दिनों संसद से लेकर सड़क तक यूट्यूब पर प्रसारित एक फूहड़ व अभद्र कार्यक्रम के खिलाफकार्रवाई की मांग गूंजती रही, जिसमें अभद्रता से सामाजिक मर्यादा की सीमाएं लांघने की कुत्सित कोशिश हुई। पिछले दिनों कॉमेडियन समय रैना के यूट्यूब शो 'इंडियाज गॉट टैलेंट' में सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर व यूट्यूबर रणवीर इलाहाबादिया ने एक अश्लील, अभद्र व अमर्यादित टिप्पणी की। इस बदमिजाज यूट्यूबर ने शो के एक प्रतिभागी के माता-पिता के अंतरंग पलों के बारे में घोर निंदाजनक प्रश्न किए। जैसा अपेक्षित था, भारतीय परिवार व सांस्कृतिक मूल्यों पर हमला करने वाली टिप्पणी पर देश में भारी विवाद हुआ। देश के विभिन्न भागों में इस मामले में शिकायतें दर्ज की गईं, और राष्ट्रीय महिला आयोग ने ऐसे कार्यक्रमों के नियमन की मांग करते हुए कार्रवाई की सिफारिश की। साथ ही राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने यूट्यूब से इस विवादित कार्यक्रम को हटाने के निर्देश दिए। देश के राजनीतिक क्षेत्रों में भी इस विवाद को लेकर तीखी टिप्पणियां सामने आईं। इस विवाद ने देश में इस बहस को एक बार फिर तेज किया कि सामाजिक मूल्यों को लेकर अभिव्यक्ति की आजादी की सीमा के निर्धारण और डिजिटल कंटेंट निर्माताओं की जवाबदेही कैसे तय की जाए। साथ ही रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा सार्वजनिक शिष्टाचार में सामंजस्य कैसे बनाया जाए। दरअसल, सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर लाइक और फॉलोअर्स बढ़ाने के लिये तमाम फूहड़ व तल्खीभरे कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि इससे यूट्यूबरों की आय बढ़ सके। बदलते वक्त की विडंबना यह है कि धीर-गंभीर व उपयोगी कार्यक्रमों को दर्शकों का वह प्रतिसाद नहीं मिलता, जो ऊल-जलूल कार्यक्रमों को मिलता है। इन कार्यक्रमों के ज्यादा देखे जाने से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का विज्ञापन भी बढ़ता है। इसी होड़ में अमर्यादित और विवादास्पद कार्यक्रमों की श्रृंखला का जन्म होता है। ऐसे में सवाल उठाया जा रहा है कि क्या सोशल मीडिया नियमन को लेकर बने कानून इस अराजकता पर अंकुश लगाने में सक्षम हैं? क्या इलेक्ट्रानिक माध्यमों के जरिये प्रसारित सामग्री पर सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम को सख्त बनाने की जरूरत है? क्या अश्लील अभिव्यक्ति को दंडनीय बनाने के लिये सख्त कानूनों की जरूरत है? सवाल यह भी है कि हंसी मजाक के कार्यक्रमों के लिये सामाजिक मर्यादाओं की सीमा कैसे तय की जाए? जाहिर है अब वक्त आ गया है कि मनोरंजक हास्य कार्यक्रमों और आपत्तिजनक कंटेंट के बीच सीमा का निर्धारण किया जाए। निस्संदेह, किसी लोकतांत्रिक देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अपरिहार्य शर्त है। लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम तमाम सामाजिक व पारिवारिक मर्यादाओं को ताक पर रख दें। किसी भी सूरत में सोशल मीडिया को एंटी सोशल अभिव्यक्ति की आजादी नहीं दी जा सकती। निस्संदेह, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों को कंटेंट के बाबत जवाबदेह बनाने की जरूरत है। इसके संचालकों को चाहिए कि रचनात्मक स्वतंत्रता के नाम पर सार्वजनिक शिष्टाचार का अतिक्रमण न करें।

ट्रंप जो चाहते थे वह सब नरेंद्र मोदी से हासिल किया

> भारतीय प्रधानमंत्री ने ट्रंप की प्रशंसा की, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा लगाये जाने वाले भारी पारस्परिक टैरिफसे बचने की कोशिश की। ट्रंप और मोदी के रिश्ते को कुछ मीडिया आउटलेट्स में भाईचारा करार दिया गया है - और गुरुवार की बैठक के दौरान यह आत्मीयता जोरदार तरीके से उबलती रही। दोनों नेताओं ने एक-दूसरे की प्रशंसा की, जबकि सार्वजनिक रूप से चर्चा के अधिक चुभने वाले बिंदुओं को दरकिनार कर दिया। उनमें से मुख्य था ट्रंप द्वारा हाल ही में घोषित पारस्परिक टैरिफका सवाल, जिसमें उन्होंने अमेरिकी वस्तुओं पर विदेशी आयात करों का जवाब प्रत्येक देश द्वारा लगाये जाने वाले दरों के बराबर देने का प्रस्ताव रखा है। दोनों दक्षिणपंथी नेताओं, मोदी और ट्रम्प, पर अपने देशों में लोकतांत्रिक पतन के आरोप लगे हैं।

टी एन अशोक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस समय भू-राजनीतिक स्थिति तेजी से बदल रही है और कई देशों में नये नेता सत्ता संभाल रहे हैं। गुरुवार को व्हाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ मोदी की निर्धारित बैठक से अमेरिका के लिए उनके व्यापार विस्तार के मामले में सकारात्मक परिणाम सामने आये, लेकिन भारत के लिए सटीक लाभ का आकलन अभी किया जाना बाकी है। हालांकि एक बात स्पष्ट है। ट्रंप आप्रवासियों पर अपनी नीति पर अड़े रहे और मोदी ने इस पर सहमति जतायी।

भारतीय प्रधानमंत्री ने ट्रंप की प्रशंसा की, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा लगाये जाने वाले भारी पारस्परिक टैरिफसे बचने की कोशिश की। ट्रंप और मोदी के रिश्ते को कुछ मीडिया आउटलेट्स में भाईचारा करार दिया गया है - और गुरुवार की बैठक के दौरान यह आत्मीयता जोरदार तरीके से उबलती रही। दोनों नेताओं ने एक-दूसरे की प्रशंसा की, जबकि सार्वजनिक रूप से चर्चा के अधिक चुभने वाले बिंदुओं को दरकिनार कर दिया। उनमें से मुख्य था ट्रंप द्वारा हाल ही में घोषित पारस्परिक टैरिफका सवाल, जिसमें उन्होंने अमेरिकी वस्तुओं पर विदेशी आयात करों का जवाब प्रत्येक देश द्वारा लगाये जाने वाले दरों के बराबर देने का प्रस्ताव रखा है। दोनों दक्षिणपंथी नेताओं, मोदी और ट्रम्प, पर अपने देशों में लोकतांत्रिक पतन के आरोप लगे हैं। दोनों नेताओं ने हाल ही में अपने-अपने देशों में फिर से चुनाव भी जीता हैरू मोदी ने पिछले साल जून में और ट्रम्प ने पिछले नवंबर में। गुरुवार को उनके अधिकांश सार्वजनिक प्रदर्शन एक-दूसरे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए समर्पित थे, जिसमें ट्रम्प ने मोदी की श्महान नेताश् के रूप में सराहना की और मोदी ने ट्रम्प को शिमत्रश् कहा। गुरुवार को मोदी अपने खुद के प्रस्तावों के साथ पहुंचे, जो ट्रम्प द्वारा भारत के खिलाफ उठाये जाने वाले किसी भी आर्थिक कदम से निपटने के लिए तैयार किये गये थे। दोनों नेता अपनी बंद कमरे की बैठक से अंतरिक्ष यात्रा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ऊर्जा उत्पादन पर साझेदारी सहित अपने देशों के बीच व्यापार बढ़ाने के समझौते के साथ बाहर आये। ट्रंप ने कहा, प्रधानमंत्री और मैं ऊर्जा पर एक महत्वपूर्ण समझौते पर भी पहुंचे हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका को भारत के लिए तेल और गैस के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में पुनर्स्थापित करेगा। उम्मीद है कि यह उनका नंबर-एक आपूर्तिकर्ता होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के समान एक अंतरराष्ट्रीय बुनियादी ढांचे का भी जिक्र किया,जो दुनिया भर के सहयोगियों को जोड़ेगा। ट्रंप ने बताया, श्हम इतिहास के सबसे महान व्यापार मार्गों में से एक के निर्माण में मदद करने के लिए मिलकर काम करने पर सहमत हुए हैं। यह भारत से इजरायल, इटली और आगे संयुक्त राज्य अमेरिका तक जायेगा, जो हमारे भागीदारों को बंदरगाहों, रेलवे और अंडरसीकेबल्स से जोड़ेगा। ट्रम्प ने अपनी ओर से कहा कि अमेरिका भारत को कई अरबों डॉलर की सैन्य बिक्री बढ़ायेगा। दोनों नेताओं ने अपने नागरिकों को अधिक समृद्ध, राष्ट्रों को अधिक मजबूत, अर्थव्यवस्थाओं को अधिक नवीन और आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक लचीला बनाने के लिए व्यापार और निवेश का विस्तार करने का संकल्प लिया। उन्होंने निष्पक्षता, राष्ट्रीय सुरक्षा और रोजगार सृजन सुनिश्चित करने वाले विकास को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका-भारत व्यापार संबंधों को गहरा करने का संकल्प लिया। इस उद्देश्य से, नेताओं ने द्विपक्षीय व्यापार के लिए एक साहसिक नया लक्ष्य निर्धारित किया-मिशन 500- जिसका लक्ष्य 2030 तक कुल द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना से अधिक करके 500 अरब डॉलर करना है। दोनों नेताओं ने बेहतर वैश्विक ऊर्जा मूल्य सुनिश्चित करने और अपने नागरिकों के लिए सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा पहुंच सुनिश्चित करने के लिए हाइड्रोकार्बन के उत्पादन को बढ़ाने के महत्व को रेखांकित किया। नेताओं ने संकट के दौरान आर्थिक स्थिरता को बनाये रखने के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार के महत्व को भी रेखांकित किया और रणनीतिक तेल भंडार व्यवस्था का विस्तार करने के लिए प्रमुख भागीदारों के साथ काम करने का संकल्प लिया। इस संदर्भ में, अमेरिकी पक्ष ने भारत को अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल होने के लिए अपने दृढ़ समर्थन की पुष्टि की। कुल मिलाकर परिणाम यह है कि ट्रम्प को वह मिल गया जो वह चाहते थे - भारत को रक्षा उपकरण और तेल और ऊर्जा उत्पादों के अमेरिकी निर्यात में एक बड़ा हिस्सा, जिससे उन क्षेत्रों में भारत को रूस का निर्यात कम हो जायेगा। जहां तक एच-1बी वीजा पर भारत के दबाव वाले मुद्दों का सवाल है।

टीम इंडिया के हेड कोच गौतम गंभीर ने मिठाई खाते हुए तस्वीर की शेयर, युवराज-इरफान लेने लगे मजे

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय टीम शनिवार को चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेने के लिए दुबई पहुंच गई है। मुख्य कोच गौतम गंभीर के लिए बतौर कोच ये पहला आईसीसी इवेंट होगा और उनकी देखरेख में टीम से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद होगी।

इस बीच मुख्य कोच गौतम गंभीर ने रविवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर की है, जिसमें वह मीठा खाता हुए दिख रहे हैं। उनके इस पोस्ट पर भारत के पूर्व क्रिकेटर इरफान पठान और युवराज सिंह ने भी अपनी मजेदार प्रतिक्रिया दी है। हाल ही में खेल के सबसे लंबे प्रारूप में न्यूजीलैंड और फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में टीम को हार का मुंह देखना पड़ा था। जिसके बाद गौतम गंभीर की कोचिंग पर सवाल खड़े हुए थे। गौरतलब है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में हार के बाद भारत ने हाल ही में संपन्न ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज 1-3 से गंवा दी थी। गौतम गंभीर ने मिठाई खाते हुए तस्वीर शेयर करके लिखा कि, जिंदगी छोटी है इसे स्वादिष्ट बनाओ। इस पर इरफान पठान ने टांग खींचते हुए पूछा, भाई ये दाल राइस के बाद है? पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने लिखा कि, गौतम गंभीर अगर लाइफ छोटी हो तो तुम मुस्कुरा सकते हो। चैंपियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से शुरू होगी जिसमें भारत का पहला मुकाबला 20 फरवरी को दुबई में बांग्लादेश से होगा। भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने इस महीने की शुरुआत में कहा था कि विराट कोहली और रोहित शर्मा को आगामी चैंपियंस ट्रॉफी में टीम के लिए बड़ी भूमिका निभानी होगी क्योंकि ये स्टार बल्लेबाज टीम और देश के क्रिकेट परिदृश्य के लिए अनमोल हैं। गंभीर का मानना है कि अगर कोई बाहर होता है तो किसी अन्य के लिए सुनहरा मौका बनता है। उन्हें उम्मीद है कि हर्षित राणा और अर्शदीप सिंह जैसे खिलाड़ी जिम्मेदारी लेकर तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के चैंपियंस ट्रॉफी से चोट के कारण बाहर होने से पैदा हुई कमी को पूरा करेंगे। पिछले साल भारत की टी20 विश्व कप जीत में अहम भूमिका निभाने वाले बुमराह ने फाइनल में अहम स्पेल सहित 15 विकेट लिए थे लेकिन पीठ की समस्या के कारण आठ टीमों की प्रतियोगिता से बाहर हो गए हैं। गंभीर ने कहा कि, किसी का अवसर चूकना किसी और के लिए एक बड़ा अवसर हो सकता है। खेल में ऐसा ही होता है। उम्मीद है कि ये खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन करेंगे और टीम के लिए काम करेंगे। बुमराह की जगह लेने वाले राणा ने अच्छा प्रदर्शन किया है और उन्हें मंगलवार रात चैंपियंस ट्रॉफी की टीम में शामिल किया गया।

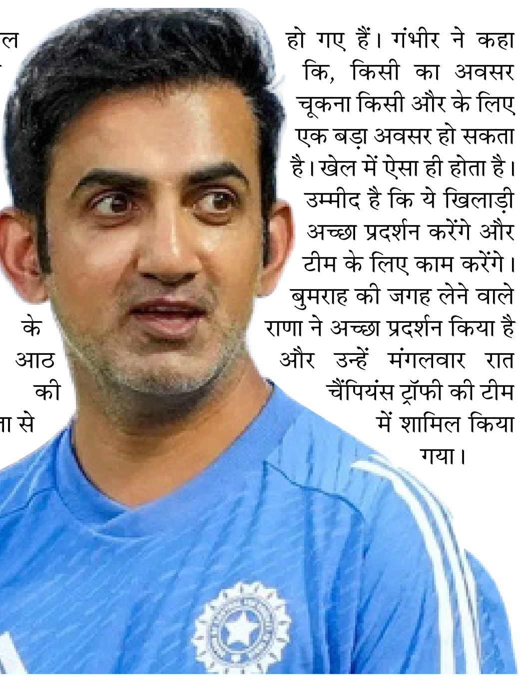

परीक्षा पे चर्चा: बिना नाकामी के कामयाबी नहीं

कड़ी मेहनत करते रहो...मैरी कॉम ने बच्चों को तनाव से निपटने के दिए टिप्स

एजेंसी

नई दिल्ली। महान मुक्केबाज एम सी मैरी कॉम, पैरालम्पिक स्टार अवनि लेखरा और सुहास यथिराज ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'परीक्षा पे चर्चा ' पहल के तहत स्कूल के बच्चों को तनाव से निपटने के टिप्स देते हुए कहा कि नाकामी के बिना कामयाबी नहीं मिलती और कड़ी मेहनत हमेशा काम आती है ।

तीनों खिलाड़ियों ने बच्चों को नाकामी से उबरने, फोकस बनाये रखने और सुनौतियों का सामना करने की भी सलाह दी। परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम बोर्ड की परीक्षा देने जा रहे बच्चों के लिये 2018 से आयोजित किया जा रहा है। दो बार की पैरालम्पिक चैम्पियन निशानेबाज लेखरा ने कहा, लोग कहते हैं कि सफलता असफलता की विलोम है । लेकिन मेरा मानना है कि नाकामी ही कामयाबी का सबसे बड़ा हिस्सा है। नाकामी के बिना कभी कामयाबी नहीं मिलती। आम तौर पर टाउन हॉल प्रारूप में होने वाला परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम इस बार दिल्ली में सुंदर नर्सरी में आयोजित किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने विभिन्न क्षेत्रों की जानी मानी हस्तियों को स्कूली बच्चों के सवालों का जवाब देने के लिये बुलाया। उन्होंने 10 फरवरी को इसकी शुरूआत खुद की। छह बार की विश्व चैम्पियन और लंदन ओलंपिक कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज मैरी कॉम ने मुक्केबाजी कैरियर के दौरान आई चुनौतियों के बारे में बात की। उन्होंने कहा, मुक्केबाजी महिलाओं का खेल नहीं है। मैंने यह चुनौती स्वीकार की क्योंकि मैं खुद को साबित करना चाहती थी और देश की सभी महिलाओं को बताना चाहती थी कि हम कर सकते हैं और मैं कई बार विश्व चैम्पियन बनी। उन्होंने कहा,आपके जीवन में भी अगर आप चुनौती का सामना करना चाहते हैं तो भीतर से मजबूत होना होगा। शुरूआत में मैने कई चुनोतियों का सामना किया। कई बार मैं हतोत्साहित हो जाती थी क्योंकि चुनौतियां काफी थी।

पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हारिस रऊफ चोट से उबरे

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए उपलब्ध रहेंगे!

एजेंसी

कराची। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हारिस राउफ चोट से उबर चुके हैं और बुधवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में टीम के पहले मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे। सूत्रों ने यह जानकारी दी। पाकिस्तान टीम के एक करीबी सूत्र ने रविवार को पीटीआई को पुष्टि की कि हारिस चोट से उबर गए हैं और कराची में चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में खेलेंगे। इस तेज गेंदबाज को हाल ही में त्रिकोणीय श्रृंखला के दौरान छाती की मांसपेशियों में खिंचाव आ गया था। सूत्र ने कहा, हारिस अब ठीक हैं और त्रिकोणीय श्रृंखला के पहले मैच के बाद दिए गए आराम से उन्हें उबरने में मदद मिली है। सूत्र ने कहा कि पाकिस्तान के किसी अन्य खिलाड़ी के साथ फिटनेस संबंधी कोई समस्या नहीं है। अपनी तेज गति और बीच के ओवरों में विकेट लेने की क्षमता के साथ पाकिस्तान के प्रमुख गेंदबाजों में से एक हारिस टीम के साथ बने हुए हैं जबकि चयनकर्ताओं ने उनके विकल्प के रूप में अकिफ जावेद को बुलाया है जिन्हें पदार्पण का इंतजार है। हारिस ने 46 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में 83 विकेट और 79 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 110 विकेट चटकाए हैं। पाकिस्तान त्रिकोणीय श्रृंखला में न्यूजीलैंड से दो बार हार गया था जिसमें शुक्रवार को हुआ फाइनल भी शामिल है। टीम को चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में हार का बदला चुकता करने का मौका मिलेगा जिसमें वे गत

ईरान, उज्बेकिस्तान एएफसी अंडर-20 एशियाई कप के क्वार्टरफाइनल में

शेन्ज़ेन। ईरान ने एएफसी अंडर20 एशियाई कप के ग्रुप सी में 10 खिलाड़ियों से खेल रहे यमन को 6-0 से तथा उज्बेकिस्तान ने इंडोनेशिया को 3-1 से हराकर टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश कर लिया हैं। रविवार को खेले गये मुकाबलों में लगातार दो जीत के साथ ईरान और उज्बेकिस्तान ने क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है। वहीं ग्रुप बी के मुकाबले में आमिर फैसल के गोल ने इराक को सऊदी अरब पर 1-0 से जीत दिलाई, जबकि इब्राहिम सबरा के दो गोल के बदौलत जॉर्डन को दक्षिण कोरिया पर 2-1 से जीत मिली। इराक अब चार अंकों के साथ ग्रुप में शीर्ष पर है। जबकि सऊदी अरब और जॉर्डन इराक से एक अंक पीछे है। दक्षिण कोरिया एक अंक के साथ सबसे नीचे पायदान पर है। इराक अब चार अंकों के साथ ग्रुप में शीर्ष पर है।

ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज ने रोहित शर्मा को लेकर की बड़ी भविष्यवाणी

एजेंसी

नई दिल्ली। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज 19 फरवरी से होने जा रहा है। इस टूर्नामेंट को मिनी वर्ल्ड कप के रूप में भी देखा जाता है, जिसमें टॉप-8 टीमें हिस्सा लेती हैं। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में पाकिस्तान, भारत, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान और बांग्लादेश की टीमें हिस्सा ले रही हैं। ऐसे में दुनिया के तमाम दिग्गज बैटर्स यहां खेलते नजर आएंगे। वहीं ऑस्ट्रेलियाई पूर्व दिग्गज माइकल क्लार्क ने अपनी भविष्यवाणी की है।

दरअसल, चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में केन विलियमसन, जो रूट, स्टीव स्मिथ, विराट कोहली और बाबर आजम जहां फैब फाइव मैदान पर उतरेंगे, तो वहीं शुभमन गिल, ट्रैविस हेड और हैरी ब्रूक जैसे युवा बैटर्स भी अपना कमाल दिखाएंगे। ये देखना रोमांचक होगा कि चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में सबसे ज्यादा रन किस बल्लेबाज के बैट से निकलेंगे। वहीं माइकल क्लार्क से जब एक पॉडकास्ट में चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के हाइएस्ट स्कोरर को लेकर सवाल किया गया, तो उन्होंने जवाब में कहा कि, मैं टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा के साथ जाऊंगा। जिनकी फॉर्म में वापसी हो चुकी है। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में सबसे ज्यादा रोहित शर्मा बनाएंगे। वहीं क्लार्क को लगता है कि इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर सबसे ज्यादा विकेट चटकाएंगे। प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट के लिए उन्होंने ट्रैविस हेड का नाम प्रिडिक्ट किया है जबकि उनको लगता है कि चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का फाइनल मुकाबला भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होगा और टीम इंडिया चैंपियन बनेगी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का ओपनिंग मैच मेजबान पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच 19 फरवरी को खेला जाएगा। इसके बाद 20 फरवरी को टीम इंडिया अपना पहला मैच खेलेगी। भारत का मुकाबला बांग्लादेश से होगा और ये मैच दुबई इंटरनेशल क्रिकेट स्टेडियम पर खेला जाएगा। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और न्यूजीलैंड की टीमें ग्रुप ए में हैं, जबकि ग्रुप बी में ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, साउथ अफ्रीका और अफगानिस्तान की टीमें हैं।

एयरटेल ने चेन्नई में स्थापित किया एसएमडब्ल्यू 6 केबल

एजेंसी

नयी दिल्ली। दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनी भारती एयरटेल लिमिटेड ने चेन्नई में नयी साउथईस्ट एशिया-मिडल ईस्ट-वेस्ट यूरोप-6 (एसईए-एमई-डब्ल्यूई-6 या एसएमडब्ल्यू 6) 21700 किलोमीटर लबी समुद्री केबल डाली है जो मिस्र के रास्ते भारत का सिंगापुर और फ्रांस (मारसे) से जोड़ेगी।

कंपनी ने आज यहां कहा कि इससे पहले उसने 30 दिसंबर, 2024 को मुंबई में इस केबल की लैंडिंग पूरी की थी। एसएमडब्ल्यू6 केबल सिस्टम भारत में 220 टेराबिट प्रति सेकंड (टीबीपीएस) की इंटरनेट क्षमता जोड़ेगा, जिससे देश की डिजिटल कनेक्टिविटी और स्पीड पहले से कहीं ज्यादा बढ़ जाएगी। इस केबल की लैंडिंग सबकॉम द्वारा की गई, जो समुद्री फाइबर ऑप्टिक केबल डेटा सिस्टम की एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता कंपनी है। एसएमडब्ल्यू 6 का डिज़ाइन, निर्माण और स्थापना भी इसी के द्वारा किया गया है। 21,700 रूट किलोमीटर लंबी यह समुद्री केबल प्रणाली भारत को सिंगापुर और फ्रांस (मारसे) से जोड़ती है जो मिस्र से होते हुए स्थलीय केबल नेटवर्क के माध्यम से गुजरती है। इस नई केबल लैंडिंग के साथ, एयरटेल ने वैश्विक स्तर पर अपनी उपसमुद्री केबल प्रणाली की क्षमता और नेटवर्क उपस्थिति को और मजबूत किया है। एयरटेल बिज़नेस के निर्देशक और सीईओ शरत सिन्हा ने कहा, हम अपने ग्राहकों को बेहतरीन सेवाएं देने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं, और यह नया निवेश तथा उपलब्धि हमारे सुरक्षित, विशाल और अत्याधुनिक वैश्विक नेटवर्क को और मजबूत बनाएगी। हमें खुशी है कि हम दुनिया की सबसे बड़ी केबल प्रणालियों में से एक को अपने नेटवर्क का हिस्सा बना रहे हैं। यह हमारी मौजूदा 4 लाख रूट किलोमीटर लंबी नेटवर्क क्षमता को और मजबूती देता है, जो 50 से अधिक देशों में फैला हुआ है। साथ ही, यह डिजिटल इंडिया की बढ़ती वैश्विक कनेक्टिविटी और डेटा आवश्यकताओं को अतिरिक्त मार्ग, विविधता और अधिक क्षमता के साथ पूरा करने की हमारी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। मुंबई और चेन्नई में केबल लैंडिंग को पूरी तरह से एयरटेल के डेटा सेंटर डिवीजन 'नेक्स्ट्रा बाय एयरटेल' के साथ जोड़ा जाएगा। इसे इन शहरों में मौजूद कंपनी की बड़ी डेटा सेंटर सुविधाओं में शामिल किया जाएगा। इसका उद्देश्य भारत में वैश्विक स्तर पर काम करने वाली बड़ी कंपनियों और व्यवसायों को बेहतर अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी और डेटा सेंटर सेवाओं तक आसान और निर्बाध पहुंच उपलब्ध कराना है। एसएमडब्ल्यू 6 केबल सिस्टम के कंसोर्टियम के एक प्रमुख सदस्य के रूप में एयरटेल ने इस कोर केबल में निवेश किया है। इसके अलावा, एयरटेल ने सिंगापुर, चेन्नई और मुंबई के बीच चार फाइबर पेयर्स का एक निजी नेटवर्क भी तैयार किया है।

आठ दिनों की गिरावट से उबरा बाजार

एजेंसी

मुंबई। विश्व बाजार की तेजी से उत्साहित निवेशकों की स्थानीय स्तर पर ऊर्जा, हेल्थकेयर, यूटिलिटीज, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और सर्विसेज समेत ग्यारह समूहों में हुई लिवाली से आज शेयर बाजार न केवल शुरुआती बल्कि पिछले लगातार आठ दिनों की गिरावट से उबरने में कामयाब हुआ।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 57.65 अंक की बढ़त के साथ 75,996.86 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 30.25 अंक मजबूत होकर 22,959.50 अंक पर बंद हुआ। हालांकि बीएसई की दिग्गज कंपनियों के विपरीत मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में मिलाजुला रुख रहा। इससे मिडकैप 0.51 प्रतिशत उछलकर 39,932.63 अंक पर पहुंच गया वहीं स्मॉलकैप 0.56 प्रतिशत की गिरावट लेकर 45,156.89 अंक पर आ गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4221 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1354 में लिवाली जबकि 2733 में बिकवाली हुई वहीं 134 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह में 34 कंपनियों में तेजी जबकि 16 में गिरावट रही। बीएसई के 11 समूहों में बढ़त का रुख रहा। इससे कमोडिटीज 0.53, ऊर्जा 0.89, वित्तीय सेवाएं 0.28, हेल्थकेयर 1.14, यूटिलिटीज 0.79, बैंकिंग 0.26, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.90, धातु 0.76, तेल एवं गैस 0.74, पावर 0.75 और सर्विसेज समूह के शेयर 0.82 प्रतिशत उछल गए। वैश्विक स्तर पर तेजी का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.18, जर्मनी का डैक्स 0.84, जापान का निक्केई 0.06 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.27 प्रतिशत मजबूत रहा। वहीं, हांगकांग के हैंगसेंग में 0.02 प्रतिशत की गिरावट रही।

अनुराग मेहरोत्रा जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया के प्रबंध निदेशक नियुक्त

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रीमियम यात्री वाहन बनाने वाली कंपनी जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर इंडिया ने आज श्री अनुराग मेहरोत्रा को कंपनी के प्रबंध निदेशक के रूप में नियुक्ति करने की घोषणा की। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि तीन दशकों के पेशेवर अनुभव के साथ, उन्होंने ऑटोमोटिव क्षेत्र की बिक्री, विपणन, रणनीति और व्यवसाय विकास में प्रमुख नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाई हैं। उनके व्यापक अनुभव में प्रमुख राष्ट्रीय और वैश्विक कंपनियों में नेतृत्व के पद शामिल हैं। उनकी पिछली भूमिकाओं में टाटा मोटर्स कमर्शियल व्हीकल्स में रणनीति और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के उपाध्यक्ष और फोर्ड इंडिया में अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक शामिल हैं। उसने कहा कि श्री मेहरोत्रा समग्र रणनीतिक विकास पहलों को आगे बढ़ाएंगे और कंपनी के चार ब्रांड स्तंभों विविधता,

अनुभव, नवाचार और समुदाय को मजबूत करेंगे। भारत में एमजी ब्रांड को इसकी शुरुआत से ही स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले राजीव चाबा संयुक्त संचालन समिति के सदस्य के रूप में प्रबंधन और शेयरधारकों को सलाह देना जारी रखेंगे। कंपनी ने कहा कि श्री चाबा के नेतृत्व में, एमजी देश के शीर्ष कार ब्रांडों में से एक बन गया है और इसने सभी श्रेणियों में नवाचार और व्यवधान के लिए मानक स्थापित किए हैं। उन्होंने ऐसे अभिनव उत्पादों के लॉन्च का नेतृत्व किया जो अपने समय से बहुत आगे थे। उन्होंने एक लचीली, उच्च प्रदर्शन करने वाली टीम बनाई है जिसने कई चुनौतियों को सफलतापूर्वक पार किया है, जिससे एमजी का तेजी से विकास हुआ है और भारतीय बाजार में इसकी स्थिति मजबूत हुई है। एस ए आई सी के अध्यक्ष के सहायक और एस ए आई सी मोटर के अंतर्राष्ट्रीय संचालन प्रमुख यू डे ने कहा, हम भारत में एम जी ब्रांड के निर्माण में उनके असाधारण नेतृत्व के लिए राजीव चाबा के आभारी हैं। अनुराग का विविध अनुभव और घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजार की गतिशीलता की गहरी समझ इस यात्रा को अगले स्तर पर ले जाने में महत्वपूर्ण होगी। जे एस डब्ल्यू एम जी मोटर इंडिया के निदेशक पार्थ जिंदल ने कहा, हम अपनी एन ई वी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हैं और एक रोमांचक उत्पाद पाइपलाइन के साथ एक नए युग में तेजी लाने के लिए तैयार हैं।

प्राइम वीडियो ने अपनी आगामी ओरिजिनल सीरीज़ दुपहिया की घोषणा की

मुंबई। प्राइम वीडियो ने अपनी नई ओरिजिनल कॉमेडी सीरीज़ दुपहिया की घोषणा की है। सीरीज़ दोपहिया छोटे शहरों की अनूठी कहानी को हास्य और भावनाओं के रंग में पेश करती है। सलोना बैंस जोशी और शुभ शिवदासानी द्वारा अपने बैनर बॉम्बे फिल्म कार्टेल के तहत निर्मित इस सीरीज़ का निर्देशन सोनम नायर ने किया है, जबकि इसे अविनाश द्विवेदी और चिराग गर्ग ने लिखा और बनाया है। नौ एपिसोड वाली यह सीरीज़ मनोरंजन से भरपूर होगी, जिसमें गजराज राव, रेणुका शहाणे, भुवन अरोड़ा, स्पर्श श्रीवास्तव, शिवानी रघुवंशी और यशपाल शर्मा जैसे प्रतिभाशाली कलाकार मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। दुपहिया का प्रीमियर भारत सहित 240 से अधिक देशों और क्षेत्रों में विशेष रूप से प्राइम वीडियो पर सात मार्च से किया जाएगा। दुपहिया की कहानी धड़कपुर नाम के एक काल्पनिक गाँव के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पिछले 25 वर्षों से अपराध-मुक्त रहने का जश्न मनाने जा रहे है। लेकिन तभी हलचल मच जाती है जब गांव की प्रतिष्ठित दुपहिया(मोटरसाइकिल) चोरी हो जाती है!

भारत के कुल आयात में खनिज संसाधनों का हिस्सा आधा, खनन क्षेत्र को बढ़ाया जाए: अनिल अग्रवाल

एजेंसी

नयी दिल्ली। खनन क्षेत्र के दिग्गज उद्योगपति और वेदांता लि. के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने भारत के कुल आयात में इस समय आधा हिस्सा खनिज संसाधनों का होने का उल्लेख करते हुए सरकार से खनन क्षेत्र नियमों प्रक्रियाओं को आसान कर इसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया है।

उन्होंने कहा सोमवार को एक बयान कहा कि "जमीन के नीचे का क्षेत्र यानी खनन क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जो बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा कर सकता है, सरकारी खजाने के लिए राजस्व पैदा कर सकता है, आयात में कटौती कर सकता है, रुपये को सहारा दे सकता है और आर्थिक वृद्धि को तेज करने में योगदान दे सकता है। उन्होंने कहा है, भारत की भौगोलिक स्थिति बहुत समृद्ध है और फिर भी हमारे कुल आयात का

50 प्रतिशत जमीन के नीचे की सामग्री जैसे तेल, सोना, हीरे, तांबा और अन्य संसाधनों के कारण है। बड़े आयात से रुपये पर दबाव बढ़ता है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र की दिशा को नियमों और प्रक्रियाओं तथा स्व-नियमन की व्यवस्था से बदला जा सकता है। श्री अग्रवाल ने कहा उन्होंने कहा, नियम और विनियम समृद्धि की गति को बढ़ाने के लिए होने चाहिए, न कि इसे धीमा करने के लिए। उन्होंने कहा, ' (तमाम तरह की) मंजूरी की परतें इस क्षेत्र के ब्राउनफील्ड और ग्रीनफील्ड विस्तार को रोकती हैं, जबकि इसमें निर्माण के साथ-साथ रोजगार पैदा करने की सबसे बड़ी क्षमता है। उन्होंने कहा हमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्र की कंपनियों को उत्पादन बढ़ाने की अनुमति देनी चाहिए। किसी भी कीमत पर, उत्पादन को रोका नहीं जाना चाहिए। हमें उनका मनोबल बढ़ाना चाहिए और सम्मान देना चाहिए। इससे भारत बदलेगा। उन्होंने कहा कि मानदंड निर्धारित होने चाहिए तथा आयकर की तरह ऑडिट के बाद स्व-प्रमाणन की ओर बढ़ा जाना चाहिए। (इससे) लोग मानदंडों का पालन करेंगे।

प्रधान सम्पादक, स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, राजकुमार यादव द्वारा राज आफसेट एबीसी काम्पलेक्स अपोजिट शुभम सिनेमा क्वीनटन रोड कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित कराकर 424-बी वैशाली इंक्लेब सेक्टर 9 इंदिरानगर लखनऊ से प्रकाशित।
समस्त विवाद वाराणसी न्यायलय के अधीन होंगे। फोन नं. 9935781155 E-mail :- info.shakuntimes@gmail.com RNI: UPHIN/2012/45286 प्रधान कार्यालय :- शक्तिपीठ, बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) पिन कोड - 221007

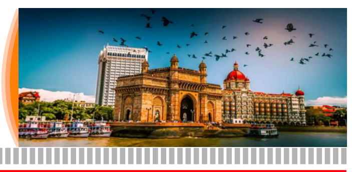

विदेश मंत्री ने आपसी सहयोग बढ़ाने पर ओमानी विदेश मंत्री के साथ की बातचीत

एजेंसी

नयी दिल्ली। विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने रविवार को ओमान में 8वें हिंद महासागर सम्मेलन में भाग लिया और ओमान के विदेश मंत्री सैय्यद बद्र अल्बुसैदी के साथ भारत-ओमान संबंधों को मजबूत करने के बारे में विचार विमर्श किया।

विदेश मंत्रालय के अनुसार डॉ जयशंकर ने हिंद महासागर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य भाषण दिया जिसमें उन्होंने क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने और एक स्थिर और समृद्ध हिंद महासागर क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। यात्रा के दौरान विदेश मंत्री ने ओमान सल्तनत के विदेश मंत्री सैय्यद बद्र अल्बुसैदी के साथ द्विपक्षीय बैठक की, जिसमें दोनों नेताओं ने भारत-ओमान संबंधों के सभी आयामों की समीक्षा की। विदेश मंत्री ने हिंद महासागर सम्मेलन की मेजबानी करने और भारत-ओमान संबंधों को मजबूत करने में उनके दृढ़ समर्थन के लिए ओमान सल्तनत के नेतृत्व की सराहना की। चर्चाओं में आपसी हित के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। विदेश मंत्री ने भारत और ओमान के बीच राजनयिक संबंधों के 70 साल पूरे होने का जश्न मनाने वाले विशेष रूप से डिजाइन किए गए लोगो का अनावरण किया। जैसा कि दोनों देश 2025 में इसे मनाने की तैयारी कर रहे हैं, लोगो इतिहास, संस्कृति और मजबूत लोगों से लोगों के संबंधों पर निर्मित लंबे समय से चली आ रही साझीदारी का प्रतीक है। विदेश मंत्री ने श्री अल्बुसैदी के साथ मांडवी टू मस्कट- इंडियन कम्युनिटी एंड द शेयर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया एंड ओमान पुस्तक का भी विमोचन किया। मस्कट में भारतीय दूतावास द्वारा प्रकाशित पुस्तक में ओमान में भारतीय प्रवासियों के समृद्ध इतिहास और सदियों पुराने लोगों से लोगों के बीच संबंधों पर प्रकाश डाला गया है जो द्विपक्षीय संबंधों को आकार देना जारी रखते हैं। सम्मेलन के दौरान विदेश मंत्री ने ब्रुनेई, बंगलादेश, ईरान, भूटान, श्रीलंका, मालदीव, मॉरीशस और नेपाल के विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें कीं, जिसमें आपसी चिंता के प्रमुख क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की गई और हिंद महासागर क्षेत्र के साथ गहरे जुड़ाव के लिए भारत की प्रतिबद्धता को मजबूत किया गया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि डॉ जयशंकर की ओमान यात्रा ने भारत और ओमान के बीच मजबूत और बहुआयामी संबंधों की पुष्टि की है तथा द्विपक्षीय एवं क्षेत्रीय सहयोग को और मजबूत करने के लिए उत्प्रेरक साबित हुई है।

भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर के विचार आज भी प्रासंगिकः उपेन्द्र

एजेंसी

पटना। राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद उपेन्द्र कुशवाहा ने कहा कि भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर के विचार आज भी प्रासंगिक है और उनकी जीवनी से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिये।

देश के प्रख्यात समाजवादी चिंतक, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 37वीं पुण्यतिथि समारोह श्रध्दांजलि सभा के रूप में रालोमो बिहार प्रदेश कार्यालय में सोमवार को मनाई गई। इस मौके पर श्री कुश्वाहा ने स्व. कर्पूरीके तस्वीर पर माल्यार्पण अर्पित कर नमन किया।इस मौके पर श्री कुशवाहा ने कहा कि स्व.कर्पूरी ठाकुर के विचार आज भी प्रासंगिक है। उनकी जीवनी से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिये। रालोमो के प्रदेश महासचिव एवं प्रवक्ता रामपुकार सिन्हा ने कहा कि इस मौके पर श्री कुशवाहा ने पुनः राज्यसभा में उठाई अपनी बातों को दोहराते हुए कहा की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बिहार के बिहटा में बन रहे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा का नाम भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर के नाम पर हो तभी जननायक भारत रत्न कर्पूरी ठाकुर की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस मौके पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक डॉ रणविजय सिंह पूर्व विधान परिषद् सदस्य रामेश्वर महतो, मुख्यालय प्रभारी एवं प्रदेश महासचिव प्रशांत पंकज, प्रदेश उपाध्यक्ष बसंत चौधरी पटेल, मोहन यादव, महासचिव सह प्रवक्ता ई. हेमन्त कुमार, नितिन भारती, प्रदेश महासचिव राम शरण कुशवाहा, डॉ. विरेन्द्र प्रसाद, अनुशुचित जाति प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक राम, ओमेन्द्र शर्मा, रवि प्रताप कश्यप विनोद पप्पू, सुदामा यादव इत्यादि प्रमुख थे।

संक्षिप्त सामाचार

अफगानिस्तान ने शरणार्थियों के साथ दुर्व्यवहार पर पाकिस्तान के समक्ष जताया विरोध

काबुल। अफगानिस्तान इस्लामी अमीरात के शरणार्थी और प्रत्यावर्तन मंत्रालय ने अफगान शरणार्थियों के साथ दुर्व्यवहार करने पर पाकिस्तान के समक्ष विरोध जताया। मंत्रालय ने रविवार को बताया कि पाकिस्तानी पुलिस ने शनिवार को क्वेटा शहर और बलूचिस्तान प्रांत के कुछ अन्य स्थानों पर अफगान शरणार्थियों के घरों पर छापे मारे और उनके साथ दुर्व्यवहार किया तथा उन्हें अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर किया। हिरासत में लिए गए लोगों में पुरुषों के अलावा 65 बच्चे और 30 महिलाएं भी हैं। बयान में कहा गया अफ़गानिस्तान के इस्लामी अमीरात के शरणार्थी और प्रत्यावर्तन मंत्रालय इस तरह की कार्रवाइयों का कड़ा विरोध और निंदा करता है, और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से पाकिस्तान में अफगान शरणार्थियों को सहायता तथा सहयोग प्रदान करना जारी रखने का आह्वान करता है ताकि वे सम्मान के साथ घर लौट सकें। मंत्रालय ने बताया कि सभी बंदियों को तुरंत दक्षिण अफगानिस्तान के कंधार प्रांत के स्पिन बुल्दक शहर में सीमा पार करके अफ़गानिस्तान भेज दिया गया। बयान में कहा गया है कि पिछले दो सालों में, पाकिस्तानी सरकार ने बार-बार इसी तरह की कार्रवाइयां की हैं जो अंतरराष्ट्रीय और इस्लामिक कानूनों के खिलाफ हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठनों के आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में लगभग 30 लाख अफ़गान शरणार्थी पाकिस्तान में रह रहे हैं।

रूस में बीयर के डिब्बे पर गांधी की छवि, पुतिन से हस्तक्षेप की अपील

तिरुवनंतपुरम। रूस स्थित 'रिवोर्ट ब्रूअरी' द्वारा बीयर के डिब्बे और बोतलों पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की छवि के इस्तेमाल ने विवाद खड़ा कर दिया है और इस संबंध में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारत में रूसी राजदूत डेनिस अलीपोव से शराब निर्माता के साथ इस मामले को उठाने का आग्रह किया गया है। महात्मा गांधी नेशनल फाउंडेशन के अध्यक्ष एबी जे जोस ने रूसी अधिकारियों को लिखे एक पत्र में अपने उत्पादों को बेचने के लिए महात्मा गांधी की तस्वीर और हस्ताक्षर का उपयोग करने वाले रेवोर्ट ब्रूअरी के कृत्य को कंपनी की ओर से अपमानजनक, अपमानजनक और अनुचित आचरण करार दिया है। उन्होंने शराब की बोतलों और वेबसाइटों से गांधी जी की अपमानजनक छवियों को हटाने के लिए तत्काल कदम उठाने की मांग करते हुए कहा, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने शराब के खिलाफ कड़ा रुख अपनाया था।

गैस पीड़ित संगठनों की जहरीला कचरा अमेरिका भेजने की सलाह

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में गैस पीड़ित संगठनों ने यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा धार जिले के पीथमपुर में भेजे जाने के बीच ये कचरा अमेरिका भेजने की सलाह दी है। चार गैस पीड़ित संगठनों के प्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से संवाददाताओं से चर्चा के दौरान ये बात कही। उन्होंने इस दौरान कई दस्तावेज़ साझा किए। संगठनों ने इस संबंध में पीथमपुर और आस-पास के क्षेत्रों के निवासियों के चिंतित होने का दावा करते हुए सरकार को खतरनाक कचरे को संयुक्त राज्य अमेरिका भेजने की व्यवस्था करने की सलाह दी। संगठनों ने कहा कि 2003 में तमिलनाडु के कोडाइकनाल में यूनिलीवर थर्मामीटर संयंत्र से कचरे के साथ भी ऐसा किया गया था। भोपाल गैस पीड़ित महिला स्टेशनरी कर्मचारी संघ की अध्यक्ष रशीदा बी ने कहा कि जब 2015 में यूनियन कार्बाइड से 10 टन खतरनाक कचरा जलाया गया था।

ब्रिटेन, यूक्रेन में अपने सैनिकों को तैनात करने के लिए तैयार

एजेंसी

लंदन। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने यूक्रेन में अपने सैनिकों को तैनात करने की घोषणा की है। डेली टेलीग्राफ समाचार पत्र में श्री स्टारमर ने कहा ब्रिटेन यूक्रेन की रक्षा और सुरक्षा को लेकर ब्रिटिश सैनिकों को तैनात करने के लिये तैयार है, जिसमें 2030 तक हर साल तीन अरब पाउंड की प्रतिबद्धता शामिल है। श्री स्टारमर ने कहा मैं यह बात हल्के में नहीं कह रहा हूं। मैं ब्रिटिश सैनिकों और महिलाओं को ख़तरे में डालने की ज़िम्मेदारी को बहुत गहराई से महसूस करता हूं। श्री स्टारमर के यूक्रेन पर एक आपातकालीन शिखर सम्मेलन के लिए सोमवार को पेरिस में फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रोन, जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़, नाटो महासचिव मार्क रूटे, इतालवी प्रधान मंत्री जियोर्जिया मेलोनी और अन्य यूरोपीय नेताओं के साथ शामिल होने की उम्मीद है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने पिछले सप्ताह कहा था कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ फोन पर बातचीत के बाद लगभग तीन साल से जारी यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने को लेकर तत्काल बातचीत करेंगे लेकिन अब यूरोप को डर है कि यूक्रेन संकट पर संभावित वार्ता में उसे दरकिनार किया जा सकता है।

श्री बड़ी दुर्गा महारानी मन्दिर बोईसर के आजाद नगर में नौवा स्थापना दिवस हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न

शकुन टाइम्स संवाददाता

पालघर। जिले के बोईसर में (प)अवधनगर अन्तर्गत धर्मनगरी आजाद नगर में हर साल कि तरह इस साल श्री बड़ी दुर्गा मंदिर व नवदेश्वर मन्दिर नौवें स्थापना दिवस उपल्क्ष मैं 13 फरवरी सुबह से रूद्राक्ष भिषेक महामृत्युंजय मंत्र कि जाप, नौव चंडी महायज्ञ आचार्य पं राघवेन्द्र महाराज जी के द्वारा वेदी पुजन व मन्त्रोउचारन द्वारा महा आरती और , व महाभडारा के साथ संपन्न हुआ। आपको बताते कि हर साल कि तरह इस साल आजाद नगर में श्री बड़ी दुर्गा महारानी मन्दिर चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दो दिवसीय नौव चंडी महायज्ञ 14 फरवरी सुबह से पुरोहितो द्वारा वेदी पुजन व मन्त्रोउचारन द्वारा देवी देवता के अहवान कर पूजन हवन ,दीप प्रज्ज्वलित करके विधिः पूर्वक पूजा किया गया । तथा 15 फरवरी को शाम को माता कि चौंकी जागरण और माता गायकार भक्त अश्विनी वशिष्ठ ने अपने सुरीली आवाज में *सुख में सब साथी,, दु:ख में कोय* अपने सूरीली आवाजो में भक्ति गीत गाकर व दिव्यज्योति जलाकर माता जी का चौकी का शुरुआत किया गया। 16 फरवरी रविवार सुबह से मन्दिर स्थापना दिवस पर मन्त्रोउचारन द्वारा पुजन श्रृंगार जलाभिषेक हवन महाआरती दोपहर से भंडारे में महाप्रसाद माता भक्तों को पहुंचने तक भेंट कराया गया।क्रायक्रम में श्रद्धालुओं में वरिष्ठ समाजसेवी भाजपा नेता संजय (भाई)पाटील, तुषार सखे, माता भक्त आनंद भाई त्रिपाठी, बजरंग दल ,गौरक्षक व हिन्दू ह्रदय सम्राट चंदन सिंह,विहि परिषद बोईसर प्रखंड के प्रमुख एसपी सिंह, वंशी गुप्ता, गणेश राणा, माता भक्त बलबीर सिंह, त्रिमूर्ति टांसपोर्ट के मालिक उघोगपति प्रेम अग्रवाल, मिडिया जगत से पालघर जिले के पत्रकार तरूण मित्र ब्यूरो ओमप्रकाश द्विवेदी, पालघर जिले पहला समाचार से अजीतसिंह , पालघर जिले से शकुन टाईम्स से मृत्युंजय पान्डेय और अन्य भक्तों ने माता के चरणों में आशीर्वाद प्राप्त किया। बड़ी दुर्गा महारानी चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रेणु दुबे, संस्थापक जितेंद्र दूबे, अशोक सिंह, धर्मेन्द्र मोर्या,दीपु यादव, हेमराज यादव, राजकुमार राय, राजू श्रीवास्तव, मयुर कुटे, सुरेश चौरसिया,सरावली ग्रामपंचायत सदस्य जुली बारी ,अनेक कमेटी के सदस्यगण का सत्कार में अहम भूमिका निभाई।

नीतीश को कुर्सी पर बनाए रखना भाजपा की मजबूरीः प्रशांत

एजेंसी

पटना। जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर कटाक्ष करते हुये कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को कुर्सी पर बनाये रखना उसकी मजबूरी है।

श्री किशोर ने सोमवार को श्री कुमार हमला बोलते हुये कहा कि वह अब सत्ता से हटने का नाम नहीं ले रहे हैं और भाजपा भी उन्हें हटाने में असमर्थ है लेकिन बिहार की जनता श्री कुमार को सत्ता से बेदखल करने के लिए कमर कस कर बैठी है। उन्होंने भाजपा पर कटाक्ष करते हुये कहा कि श्री कुमार को कुर्सी पर बनाए रखना उसकी मजबूरी है। यदि भाजपा दिल्ली में अपनी सरकार बचाना चाहती है तो उसे श्री कुमार को कुर्सी पर बैठाए रखना होगा और श्री कुमार को कुर्सी पर बनाए रखना हैं तो बिहार छूट जाना हैं। श्री किशोर ने श्री कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि बिहार की जनता उनके कामकाज से नाखुश है और यह असंतोष अगले चुनावों में साफ दिखाई देगा। उन्होंने आरोप लगाया कि श्री कुमार केवल राजनीतिक समीकरण बिठाने में लगे हैं, जबकि बिहार में विकास के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठा रहे हैं। श्री कुमार ये बात नहीं कर रहे है की ऐसी व्यवस्था बने की गुजरात में फैक्ट्री लगे या ना लगे, पहले मोतिहारी, छपरा, गोपालगंज में फैक्ट्री लगना चाहिए। उन्होंने जनता से पूछा कि क्या उन्होंने किसी अखबार में यह खबर देखी है कि श्री कुमार बिहार के हर जिले में फैक्ट्री लगाने की मांग कर रहे हैं। अब बिहार की जनता उन्हें ऐसा सबक सिखाएगी कि सत्ता में वापसी के सारे रास्ते बंद हो जाएंगे।

भगदड़ के बाद नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म टिकटों की काउंटर से बिक्री बंद

नई दिल्ली। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ के बाद बड़ा फैसला लिया गया है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म टिकटों की काउंटर से बिक्री को बंद कर दिया गया है। ये आदेश 26 फरवरी तक लागू रहेगा। बताया जा रहा है कि भगदड़ के बाद से ह्ष्ठरूस् पर कोई प्लेटफॉर्म टिकट जारी नहीं किया जा रहा है। रेलवे के अधिकारियों ने कहा कि उन्होंने यह फैसला हादसे के बाद भीड़ को देखते हुए लिया है। यात्रियों को असुविधा न हो उसके लिए आरपीएफ और टीटी को हर एंट्री पॉइंट पर तैनात किया गया है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार रात भगदड़ में 18 लोगों की मौत होने के बाद स्टेशन पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। प्रयागराज की ओर जाने वाले यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए, भारतीय रेलवे ने महाकुंभ के श्रद्धालुओं के लिए आज पांच अतिरिक्त विशेष ट्रेनें निर्धारित की हैं। बता दें कि स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 14 और 15 पर प्रयागराज (जहां महाकुंभ का आयोजन किया गया है) जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए यात्रियों की भीड़ उमड़ पड़ी जिसके बाद वहां भगदड़ मच गई। इस घटना में 18 लोगों की मौत हो गई। वहीं, राजधानी के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ में हताहत लोगों के लिए रेलवे ने मुआवजा देने की घोषणा की है। उत्तर रेलवे के मुख्य प्रवक्ता ने बताया कि भगदड़ की घटना के प्रभावित लोगों को मुआवजे की घोषणा की गई है और धनराशि वितरित भी की जा रही है।

नीतीश ने जननायक कर्पूरी ठाकुर को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

एजेंसी

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर को आज उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री कुमार ने स्व. कर्पूरी ठाकुर की पुण्यतिथि के अवसर पर सोमवार को यहां देशरत्न मार्ग स्थित जननायक कर्पूरी ठाकुर स्मृति संग्रहालय में आयोजित समारोह में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री-सह-कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विजय कुमार सिन्हा, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, विधायक कुमार शैलेन्द्र, पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामकृपाल यादव, जननायक स्व. ठाकुर के परिजन, बिहार राज्य नागरिक परिषद् के पूर्व महासिचव अरविंद कुमार, बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य शिवशंकर निषाद सहित अन्य जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी जननायक की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के दौरान कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव श्री प्रणव कुमार, निदेशक, संग्रहालय निदेशालय, श्रीमती रचना पाटिल, पटना के जिलाधिकारी डॉ0 चंद्रशेखर सिंह, वरीय पुलिस अधीक्षक श्री अवकाश कुमार सहित अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना आयोजित की गई तथा भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर के जीवन एवं कृतित्व पर आधारित गीत, भजन-कीर्तन एवं निर्गुण गीत की प्रस्तुति की गई।

केंद्रीय मंत्री संजय ने राजीव गांधी के धर्म पर टिप्पणी कर विवाद खड़ा किया

एजेंसी

करीमनगर। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार ने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के धर्म पर टिप्पणी कर विवाद खड़ा कर दिया है। श्री बंदी संजय ने स्वदेशी जागरण मंच द्वारा रविवार को करीमनगर के अंबेडकर स्टेडियम में आयोजित स्वदेशी मेले के समापन समारोह में बोलते हुए लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की वंशावली पर कांग्रेस नेताओं के बयानों की आलोचना की और सवाल किया कि श्री राजीव गांधी को हिंदू कैसे माना जा सकता है। उन्होंने दावा किया कि श्री राजीव गांधी के पिता फिरोज जहांगीर खान एक पारसी थे जिनके पैतृक मूल फारस में थे और इसलिए राजीव गांधी हिंदू नहीं बल्कि मुस्लिम वंश के पारसी थे। उन्होंने कहा कि गांधी परिवार की कोई निश्चित जाति, धर्म या राष्ट्रीय पहचान नहीं है जबकि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें %%शुद्ध भारतीय%% बताया जिनका विश्व स्तर पर सम्मान किया जाता है। मंत्री ने कांग्रेस सरकार पर पिछड़ा वर्ग जाति जनगणना की आड़ में हिंदुओं को गलत तरीके से निशाना बनाने का भी आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस पिछड़ा वर्ग (बीसी) श्रेणी में मुसलमानों को शामिल करके एक खास समुदाय को लाभ पहुंचाने के लिए आरक्षण प्रणाली में हेराफेरी कर रही है। श्री संजय के अनुसार पिछड़ा वर्ग के लिए प्रस्तावित 42 प्रतिशत आरक्षण में से 10 प्रतिशत मुसलमानों को मिलेगा जिससे अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए हिस्सा प्रभावी रूप से घटकर 32 प्रतिशत रह जाएगा। उन्होंने इस कदम की आलोचना करते हुए इसे पिछड़ा वर्ग के साथ अन्याय बताया।

उन्होंने महाराष्ट्र की तरह तेलंगाना में भी धर्मांतरण और लव जिहाद के खिलाफ कानून लागू करने की वकालत की। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि अगर तेलंगाना सरकार मुसलमानों को पिछड़ा वर्ग श्रेणी में शामिल करती है और सूची को मंजूरी के लिए केंद्र को भेजती है तो केंद्र सरकार इसे स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने हिंदू समुदाय के लिए काम करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई और सांप्रदायिकता के आरोपों को खारिज कर दिया।

मस्कुलोस्केलेटल विकारों के लिए योग प्रबंधन पर कार्यशाला

नयी दिल्ली। संचयी आघात - मस्कुलोस्केलेटल विकारों और योग के प्राचीन एवं वैज्ञानिक अभ्यास से प्रभावी प्रबंधन के बारे में जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी के मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान में एक कार्यशाला का आयोजन किया। संस्थान ने सोमवार को यहां बताया कि योग प्रबंधन पर एक कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के मस्कुलोस्केलेटल विकारों और योग के संबंघन में जागरुक करना था। यह कार्यशाला कल देर शाम संपन्न हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. काशीनाथ समगंडी ने मस्कुलोस्केलेटल विकारों से निपटने के लिए यौगिक और आयुर्वेदिक प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने मांसपेशियों की ताकत बनाए रखने के लिए भगवद्गीता के श्लोक 'युक्ताहार विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु' का उल्लेख करते हुए स्वस्थ जीवन शैली और संतुलित आहार पर जोर दिया। डॉ. समागंडी ने कहा कि कम रक्त परिसंचरण, विषाक्त पदार्थों में वृद्धि और मधुमेह या हर्निया जैसी पहले से मौजूद बीमारियों के कारण मस्कुलोस्केलेटल विकारों होते हैं।

केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री एवं महराजगंज सांसद पंकज चौधरी और पनियरा विधायक ज्ञानेन्द्र सिंह शकुन टाइम्स अखबार को प्रमुखता से पढ़ते हुए

RNI : UPHIN/2012/45286
शकुन टाइम्स
(राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत
YouTube shakuntimes

आवश्यकता है
भारत के समस्त राज्यों व जिलों में अनुभवी और तेज तर्रार प्रेस रिपोर्टरों की
यदि आप में है गलत को गलत कहने की हिम्मत तो शकुन टाइम्स में आपका स्वागत है
नोट : प्रिंट एवं डिजिटल मीडिया में एक साथ कार्य करने का सुनहरा अवसर
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- 9415052283, 9506320127
संपर्क कार्यालय : शक्तिपीठ,सारनाथ,वाराणसी (उ.प्र.) 221007